Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَاۡكُلُوۡۤا اَمۡوَالَـكُمۡ بَيۡنَكُمۡ بِالۡبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنۡ تَكُوۡنَ تِجَارَةً عَنۡ تَرَاضٍ مِّنۡكُمۡ وَلَا تَقۡتُلُوۡۤا اَنۡفُسَكُمۡ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمۡ رَحِيۡمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक- 42

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

27 सफर 1441 हिज्री कमरी 15 इख़ा 1399 हिज्री शम्सी 15 अक्तूबर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

किसी को उपहास की नज़र से न देखा जाए। दिल न तोड़ा जाए। जमाअत में आपस में झगड़े फ़साद न हों। धार्मिक ग़रीब भाईयों को कभी हीनता की दृष्टि से न देखो। माल तथा दौलत या ख़ानदान की बुज़ुर्गी पर व्यर्थ का गर्व करके दूसरों को अपमानित और तुच्छ न समझो।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

जमाअत के लिए अख़लाक़ का निसाब

अख़लाक़ की अवस्था ऐसी ठीक हो कि किसी को नेक नीयती से समझाना और ग़लती से आगाह करना ऐसे समय पर हो कि उसे बुरा न लगे। किसी को उपहास की नज़र से न देखा जाए। दिल न तोड़ा जाए। जमाअत में आपस में झगड़े फ़साद न हों। धार्मिक ग़रीब भाईयों को कभी हीनता की दृष्टि से न देखो। माल तथा दौलत या ख़ानदान की बुज़ुर्गी पर व्यर्थ का गर्व करके दूसरों को अपमानित और तुच्छ न समझो। ख़ुदा तआला के निकट आदरणीय वही है जो मुत्तक़ी है। अत: फ़रमाया اِنَّ اَكۡرَمَكُمۡ عِنۡدَ اللّٰهِ اَتۡقٰٮكُمۡ (अल्हुजरात:14) दूसरों के साथ भी अच्छे अख़लाक़ से काम लेना चाहिए। जो बुरे आचरण का उदाहरण होता है वह भी अच्छा नहीं। हमारी जमाअत के साथ लोग मुक़द्दमा करने का केवल बहाना ही ढूंढते हैं। लोगों के लिए एक ताऊन है। हमारी जमाअत के लिए दो ताऊन हैं। अगर कोई जमाअत में से कोई एक आदमी बुराई करेगा, तो इस एक से सारी जमाअत पर लांछन आएगा। अक्लमन्दी, विनय और क्षमा की आदत को बढ़ाओ। नादान से नादान की बातों का जवाब भी शिष्टाचार और सभ्यता से दो। गाली का जवाब गाली न हो। मैं जानता हूँ। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शिक्षा में भी कुछ ऐसी ही व्यावहारिक हिक्मत थी कि अगर ऐसा न करते तो रोज़ मारें खाते फिरते। रोमियों की सल्तनत थी। यहूद के फ़क़ीह और फ़रीसी उसके मुक़र्रब थे। उस समय अगर वह एक गाल पर थप्पड़ खाकर दूसरा गाल न फेरते तो रोज़ मारें खाया करते और रोज़ मुक़द्दमे होते। बावजूद इसके कि वह ऐसी नर्म शिक्षा देते थे फिर भी यहूद उन्हें दम न लेने देते थे। उस समय के मौजूदा हालात इंजील की शिक्षा ही को चाहते होगे। इस समय हमारी जमाअत की अवस्था भी लगभग वैसी ही है। क्या तुम नहीं देखते कि मार्टिन क्लार्क ईसाई के मुक़द्दमा में मुहम्मद हुसैन ने भी इसी की गवाही दी। अब समझ लो कि क़ौम से भी कोई उम्मीद नहीं है। रही गर्वनमेंट उसको भी बदज़न किया जाता है और गर्वनमेंट किसी हद तक असहाय भी है अगर ख़ुदा न चाहे वह बदज़न हो क्योंकि भविष्य को जानने वाली नहीं है। इस लिए हमको प्राय गर्वनमेंट के हुज़ूर विशेष रूप से मेमोरियल भेजने पड़े और अपने हालात से ख़ुद उसको सूचित करना पड़ा ताकि उस को सही और सच्ची घटनाओं का ज्ञान हो। उचित है कि इन परीक्षा के दिनों में अपने नफ़्स को मार कर तक़्वा धारण करें। मेरा उद्देश्य इन बातों से यही है कि तुम नसीहत और इबरत प्राप्त करो।

दुनिया फ़ना का स्थान है। आख़िर मरना है, ख़ुशी धर्म की बातों में है। असल उद्देश्य तो धर्म ही है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 193 से 194 प्रकाशन 2008 ई क़ादियान)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहत

हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास उस वक़्त पहुंचे जब आप रुकू में थे तो उन्होंने सफ़ में शामिल होने से पहले रुकू कर दिया और इसका वर्णन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से किया तो आप ने फ़रमाया अल्लाह आप को नेकी की इच्छा और अधिक दे। फिर ऐसा न करना

(हज़रत सय्यद जैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो इस हदीस की व्याख्या में फ़रमाते हैं इमाम मालिक (रह) और बहुत से अन्य फ़ुक़्हा जायज़ समझते हैं कि अगर मस्जिद में दाख़िल होने वाला समझे कि सफ़ में शामिल होने तक इमाम रुकू से खड़ा हो जाएगा तो वह जहां है वहीं रुकू कर ले और फिर ऐसी हालत में सफ़ के साथ जा मिले। इमाम शाफ़ी (रह) इसको मकरूह समझते हैं। इमाम अबू हनीफ़ा (रह) अकेले शख़्स के लिए मक़रूह समझते हैं। लेकिन अगर एक से अधिक हों तो उनके निकट ऐसा करना जायज़ है। ऊपर वर्णित हदीस से इमाम शाफ़ी के मज़हब का समर्थन होता है। नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने हज़रत अबू बकर रज़ि के शौक़ को सराहा और दुआ दी। परन्तु भविष्य के लिए मना फ़र्मा दिया। नमाज़ में सन्जीदगी वक़ार तथा भद्रता की बहुत ज़रूरत है और यह कर्म इन बातों के विपरीत है।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताबुल अज़ान, प्रकाशन कादियान 2006 ई)

केवल इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जिस ने स्त्रियों कि इन्सानियत को स्पष्ट कर दे दिखाया है

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब खलीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं कि

“وَلَهُنَّ مِثۡلُ الَّذِىۡ عَلَيۡهِنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ में आम क़ानून बताया कि मर्दों और औरतों के अधिकारों इन्सान होने के नाते बराबर हैं जिस तरह औरतों के लिए ज़रूरी है कि वे मर्दों के अधिकारों का ध्यान रखें इसी तरह मर्दों के लिए भी ज़रूरी है कि वे औरतों के अधिकारों को अदा करें और इस बारे में किसी प्रकार का अनुचित पक्ष धारण न करें।

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भव से पहले औरतों के कोई अधिकार स्वीकार ही नहीं किए जाते थे बल्कि उन्हें मालों और जायदादों की तरह एक स्थानान्तरित होने वाला विरसा ख़्याल किया जाता था और उनके जन्म को केवल मर्द की ख़ुशी का कारण क़रार दिया जाता था यहां तक कि मसीही जो अपने आपको औरतों के अधिकारों का बड़ा समर्थक कहते हैं उनकी पवित्र पुस्तकों में भी औरत के बारे में लिखा था कि “अलबत्ता मर्द को अपना सिर ढांकना नहीं चाहिए क्योंकि वह ख़ुदा की सूरत और उसका प्रताप है परन्तु औरत मर्द का प्रताप है। (करनथियों अध्याय 11 आयत 7)इसी तरह लिखा था: “और मैं आज्ञा नहीं देता कि औरत सिखाए।” (तमताऊस अध्याय 2 आयत 12)

केवल इस्लाम ही एक ऐसा मज़हब है जिसने औरतों की इन्सानियत को स्पष्ट करके दिखाया और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही वह पहले इन्सान हैं जिन्हों ने औरतों के इन्सान होने के बराबर के अधिकार स्थापित किए और وَلَهُنَّ مِثۡلُ الَّذِىۡ عَلَيۡهِنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ की

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-22)

जर्मन पार्लीमेंट के मैम्बरों से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

22 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक मंगलवार शेष.......)

पार्लीमेन्ट के मेम्बरों से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ख़िताब

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 7 बजकर 40 मिन्ट पर हाज़िरीन से अंग्रेज़ी भाषा में ख़िताब फ़रमाया। इस ख़िताब का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है।

समस्त सम्मान्नीय मेहमानों की सेवा में अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकाताहू।

अल्लाह तआला आप सब पर सलामती और रहमतें नाज़िल फ़रमाए

सबसे पहले तो आप सब सम्मान्नीय लोगों का शुक्रिया कि आपने हमारी दावत को स्वीकार किया और आज शाम इस आयोजन में पधारे। आजकल दुनिया में प्राय और पश्चिमी दुनिया में विशेष रूप से देश से निकले हुए लोगों और उनके समाज पर प्रभाव का विषय भरपूर रंग में बहस का विषय है, और इस बेहस का अधिक हिस्सा मुसलमानों के गिर्द घूमता है। कई हुकूमतें बल्कि अवाम भी तहज़ीबों के टकराव के भय से भयभीत हैं और समझते हैं कि मुसलमान न केवल पश्चिमी समाज का हिस्सा बनने की योग्यता नहीं रखते बल्कि इस समाज के लिए एक ख़तरा हैं।

इस विषय पर बात करने से पहले इस बात का स्पष्टीकरण ज़रूरी है कि "तहज़ीब" का मूल अर्थ है क्या? इसके जवाब में मैं जमाअत अहमदिया के दूसरे ख़लीफ़ा की वर्णन की गई परिभाषा, जिससे मैं ख़ुद पूर्ण तौर पर सहमत हूँ, प्रस्तुत करता हूँ। इस परिभाषा के अनुसार तहज़ीब से अभिप्राय किसी समाज की भौतिक तरक़्क़ी है। आर्थिक तरक़्क़ी, तकनीकी आविष्कार, यातायात के साधन, समपर्क के साधन और इल्मी तरक़्क़ी वे कारण हैं जो किसी तहज़ीब की तरक़्क़ी का पता देते हैं। इसी तरह हथियारों की ताक़त या क़ानून या किसी भी और माध्यम से अमन तथा प्यार की स्थापना के लिए किए गए कार्य भी तहज़ीब की तरक़्क़ी का स्तर होते हैं।

क़ौमों की तहज़ीब के अतिरिक्त उनकी सभ्यता भी होती है जो किसी क़ौम के लोगों के दृष्टिकोण, आर्थिक समस्याओं के बारे में उनके दृष्टिकोण और उनके कर्म और प्रतिक्रिया का द्योतक होती है। सभ्यता का नींव भौतिक तरक़्क़ी के स्थान पर किसी क़ौम के लोगों के आचरण, धार्मिक व्यवहार और रिवायतों पर होता है।

अत: जहां तहज़ीब भौतिक, टैक्नोलोजीकल और इल्मी तरक़्क़ी का नाम है, वहां सभ्यता धार्मिक, अख़लाक़ी और सोच की द्योतक है। तहज़ीब और संस्कृति के इस अन्तर को ईसाइयत के आरम्भिक इतिहास से समझा जा सकता है। इस दौर में सल्तनत रोम अपनी ताक़त के चरम पर थी, बल्कि आज भी दुनिया की तारीख़ की महान सभ्यताओं में गिनती होती है। अपनी भौतिक तरक़्क़ी, शहरी सुविधाओं और हुकूमत के प्रबन्ध की दृष्टि से सल्तनत रोम को बहुत सभ्य शिक्षित माना जाता था।

परन्तु यह ज़ाहिरी महानता उसके अख़लाक़ी स्तर के बराबर न थी, क्योंकि ईसाइयत के आरम्भिक ज़माना में इसके शहरियों में तरक़्क़ी-पसंद रुझान पैदा हो चुके थे। ईसाइयत धर्म के उसूलों पर उनकी रहनुमाई करती, जबकि रोमन पदाधिकारी उनके लिए दुनयावी क़नून तथा नियम बनाया करते थे।

यूं रोमियों की सांसारिक उन्नति उनकी तहज़ीब को प्रतिबिम्ब करती, जबकि ईसाइयत उन्हें एक बेहतरीन संस्कृति से जोड़ती । समय के साथ ईसाइयत सल्तनत रोम का प्रमुख धर्म बन गई और यूं उनकी तहज़ीब ने ईसाइयत की सभ्यता को अपना लिया। इस मिलाप और इसके ज़बरदस्त प्रभाव ने रवायतों और इक़्दार की वह नींवें रखीं जो आज भी धर्म से दूर हो जाने के बावजूद, पश्चिमी समाज का अंग हैं।

अब इमीग्रेशन की बहस की तरफ़ आएं, तो कई पश्चिमी देशों की जनसंख्या में बहुत तब्दीली हुई है। बहुत से देशों से देश छोड़ने वाले यहां पहुंचे हैं परन्तु मूल चिन्ता का कारण इन देशों में मुसलमानों का शान्ति धारण करना बन गया है। इन पश्चिमी देशों के मूल शहरी मुसलमानों के यहां प्रचुरता से पनाह लेने के कारण अपनी सदियों पुरानी तहज़ीब, संस्कृति और इक़्दार को ख़तरा में महसूस करते हैं।

जैसा कि मैंने बताया, हम संस्कृति को भौतिक तरक़्क़ी विचार करते हैं। पश्चिमी तहज़ीब का विरोध करना, इसे रद्द करना या इस से बचना तो दूर, तरक़्क़ी करने वाली कौमें तो इस तहज़ीब के अनुसार ढलती जा रही हैं। तो पश्चिमी तहज़ीब का ख़तरे में होना तो दूर की बात, हक़ीक़त इसके विपरीत नज़र आ रही है

सफ़र और यातायात के नवीन माध्यमों ने दुनिया को एक ग्लोबल विलेज में तब्दील कर दिया है। टेलीविज़न, अन्य प्रचार के माध्यमों और विशेष रूप से इंटरनेट की मौजूदगी में अब कुछ भी छुपा नहीं रहा और आर्थिक दृष्टि से पीछे रहने वाले देशों में रहने वाले लोग तरक़्क़ी करने वाली क़ौमों के रहन सहन को देख सकते हैं। पश्चिमी ज़िन्दगी गुज़ारने के प्रभाव को स्वीकार करते हुए वे भी भौतिक तरक़्क़ी के इसी दर्जे को प्राप्त करने के इच्छुक हैं ।

अत: इस दावा में कि पश्चिमी या यूरोप की तहज़ीब मुसलमानों की मौजूदगी से ख़तरा में है, कोई दम नहीं। बल्कि पश्चिमी तहज़ीब तो मुस्लिम दुनिया सहित समस्त क्षेत्रों पर प्रभावकारी हो रही है। हाँ, यह विचार कि इस्लाम के फैलने से यूरोप की धार्मिक और अख़लाक़ी संस्कृति का ख़तरा में होना एक उचित और समझ में आने वाली चिन्ता है और अब मैं इसकी तरफ़ आता हूँ।

यह तो एक अटल वास्तविकता है कि लोग धर्म से दूर होते जा रहे हैं और पश्चिम में तो यह रुझान चिन्ताजनक सीमा तक बढ़ा हुआ है। पश्चिमी देशों में होने वाली जनसंख्या की गिनती से साबित है कि धर्म या ख़ुदा की तरफ़ रुझान रखने वाले लोगों की संख्या गिरती चली जा रही है। मेरे निकट नास्तिकता पश्चिमी संस्कृति के लिए इस्लाम की तुलना में अधिक बड़ा ख़तरा है। पश्चिमी इक़्दार सदियों पुरानी हैं और उनकी बुनियादें धार्मिक रिवायतें विशेष रूप से ईसाई और यहूदी विरसे पर आधारित हैं। यह धार्मिक इक़्दार और संस्कृति की रस्में उन लोगों की ज़द में हैं जो धर्म और धर्म के सम्पूर्ण विरोधी हैं।

एक धार्मिक रहनुमा की हैसियत से मेरी राय है कि आप अपनी संस्कृति और अपने विरसे की सुरक्षा के लिए अपनी ताकतें और कोशिशें धार्मिक रुझान के पतन को रोकने और लोगों को उनके धर्म की तरफ़ वापस लाने पर केन्द्रित करें, चाहे ऐसे लोगों का धर्म ईसाइयत , यहूदियत या कुछ भी हो। यह तो किसी भी तरह उचित नहीं कि तरक़्क़ी के नाम पर अख़लाक़ी स्तर और आचरण को अचानक तर्क कर दिया जाए जो सदियों से इस समाज का हिस्सा चली आ रही हैं। मेरा यह भी विचार है कि पश्चिम में धार्मिक रुझान का पतन ही है जिसके कारण लोग इस्लाम से भयभीत हैं, क्योंकि उन्हें मालूम है कि मुसलमान प्राय अपने धर्म से जुड़ा रहते हैं। इसके सम्मुख मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि आप मीडिया में कुछ भी पढ़ें या सुनें, इस्लाम से भयभीत होने का कोई कारण नहीं। मुसलमान क़ुरआन करीम को पूर्ण और सम्पूर्ण धार्मिक शिक्षा मानते हैं और क़ुरआन करीम से हमारी मुहब्बत और इसकी इताअत के कारण हम ईमान रखते हैं कि धर्म हर व्यक्ति के लिए दिल का मामला और ज़ाती मामला है।

क़ुरआन करीम की दूसरी सूरह की आयत नम्बर 257 में स्पष्ट हुक्म है कि धर्म के मामला में कोई जबर नहीं। अत: ग़ैर मुस्लिमों को यह भय हरगिज़ नहीं

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

अबू बकर रज़ि हमारे सरदार हैं और उन्होंने हमारे सरदार आर्थात बिलाल को आज़ाद किया (हज़रत उमर रज़ि)

हज़रत बिलाल रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सारी ज़िन्दगी में उनके लिए सफ़र तथा ठहराव में मुअज़्ज़न रहे और आप इस्लाम में पहले शख़्स थे जिन्होंने अज़ान दी।

रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुअज़्ज़न, हब्शा वालों में से सर्वप्रथम, महान बदरी सहाबी हज़रत बिलाल बिन रिबाह रज़ि अल्लाह अन्हु के प्रशंसनीय गुण।

चार मरहूमीन प्रिय रऊफ़ बिन मक़सूद जूनीयर छात्र जामिआ अहमदिया यूके(बेल्जियम), आदरणीय ज़फ़र इक़बाल क़ुरैशी साहिब (भूतपूर्व नायब अमीर इस्लामाबाद, पाकिस्तान), सम्मानीय काबीने काबाजा काटे साहिब आफ़ सेनेगाल और आदरणीय मुबश्शिर लतीफ़ साहिब ऐडवोकेट आफ़ लाहौर (कैनेडा) का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़े जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 सितम्बर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन बदरी सहाबी का मैं ज़िक्र करूँगा वह हैं हज़रत बिलाल बिन रबाह रज़ि। हज़रत बिलाल के पिता का नाम रिबाह था और माता का नाम हमामा। हज़रत बिलाल रज़ि उमय्यह बिन ख़लफ़ के ग़ुलाम थे। हज़रत बिलाल रज़ि की कुनिय्यत अबू अब्दुल्लाह थी जबकि कुछ रिवायतों में अबू अब्दुर्रहमान और अबू अब्दुल करीम और अबू अमरो भी वर्णित है। हज़रत बिलाल रज़ि की माता हब्शा की रहने वाली थीं लेकिन पिता अरब से ही सम्बन्ध रखते थे। अन्वेशकों ने लिखा है कि वह हब्शी सामी नस्ल से सम्बन्ध रखते थे अर्थात पुराने ज़माना में सामी या कुछ अरबी क़बीला अफ़्रीक़ा में जाकर आबाद हो गए थे जिसके कारण उनकी नस्लों के रंग तो अफ़्रीक़ा की दूसरी क़ौमों की तरह हो गए लेकिन वहां की विशेष निशानियां और आदतें उनमें प्रकट न हुईं। बाद में उनमें से कुछ लोग ग़ुलाम बन कर अरब वापस लौट गए। क्योंकि उनका रंग काला था इसलिए अरब उन्हें हब्शी यानी हब्शा के रहने वाले ही समझते थे।

एक रिवायत के अनुसार हज़रत बिलाल रज़ि मक्का में पैदा हुए और मुवल्लदीन में से थे। मुवल्लदीन उन लोगों को कहते थे जो ख़ालिस अरब न हों। एक दूसरी रिवायत के अनुसार आप सुरात में पैदा हुए और सुरात यमन और हब्शा के निकट है जहां मिली जुली नस्ल बहुत अधिक पाई जाती है।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 174-175"बिलाल बिन रिबाह", दारुल कुतुब अल्इल्मिया 2017 ई)

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा सजिल्द भाग 1 पृष्ठ 415 "बिलाल बिन रिबाह' दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2008 ई)

(रोशन सितारे लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 01 पृष्ठ 145) (उसदुल ग़ाबह (अनुवाद भाग 1 पृष्ठ 283 प्रकाशन मकतबा ख़लील)

हज़रत बिलाल रज़ि का रंग गंदुम रंग वाला स्याही मायल था। दुबला पुतला जिस्म था। सिर के बाल घने थे और गालों पर गोश्त बहुत कम था।

(रोशन सितारे भाग1 पृष्ठ 145 लेखक ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब)

हज़रत बिलाल रज़ि ने कई शादियां कीं। उनकी कुछ बीवियां अरब के निहायत शरीफ़ और सम्मानीय घरानों से सम्बन्ध रखती थीं। आप की एक बीवी का नाम हाला बिन्त औफ़ था जो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि की बहन थीं। एक पत्नी का नाम हिन्द ख़ौलानिया था। बनू अबू बुकेर के ख़ानदान में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि का निकाह करवाया। हज़रत अबू दरदा रज़ि अल्लाह तआला अन्हु के ख़ानदान में भी हज़रत बिलाल रज़ि का सुसराली रिश्ता क़ायम हुआ था। अलबत्ता किसी से कोई औलाद नहीं हुई।

(सैरुस्सहाबा भाग 2 ''बिलाल बिन रिबाह' पृष्ठ 159 दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची 2004 ई)

(अलअसाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा ले इब्ने हिज्र असकलानी भाग 8 पृष्ठ 339'' हाल बिन्त औफ़'', दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2005 ई)

(तारीख़ दमिश्क़ अल-कबीर ले इब्ने असाकिर भाग 10 पृष्ठ 334 ज़िक्र मन अस्माहु बिलाल बिन रिबाह, दारे अहया अत्तुरास अलअरबी बेरूत 2001)

हज़रत बिलाल रज़ि के एक भाई थे जिनका नाम ख़ालिद था और एक बहन थीं जिनका नाम ग़ुफ़ैरह था।

(उसदुल ग़ाबह भाग 1 पृष्ठ 418 बिलाल बिन रिबाह। दारुल कुतुब अल्इल्मिया 2016 ई)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बिलाल साबिक़ुल हब्शा हैं। अर्थात हब्शा वालों में से सबसे पहले इस्लाम लाने वाले हैं।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 175 "बिलाल बिन रिबाह", दारुल कुतुब अल्इल्मिया 2017 ई)

हज़रत अनस रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस्लाम लाने में सबक़त ले जाने वाले चार व्यक्ति हैं। أَنَا سَابِقُ الْعَرَبِ अना साबिक़ुल अरब। अर्थात मैं अरबों में से सबक़त ले जाने वाला हूँ। سَلْمَانُ سَابِقُ الْفُرْسِ सल्मानो साबिक़ुल फारस। सलमान फ़ारस वालों में से सबक़त ले जाने वाले हैं और बिलाल साबिक़ुल हब्शा। بِلَالٌ سَابِقُ الْحَبَشَةِ बिलाल हब्शा वालों में से सबक़त ले जानेवाले हैं और صُهَيْبٌ سَابِقُ الرُّوْمِ सुहैब साबिक़ुल रोम और सुहैब रोमियों में से सबक़त ले जाने वाले हैं

(सैर अअ्लामुन्नबला ले इमाम अज़्ज़हबी भाग 01 पृष्ठ 349 ''बिलाल बिन रिबाह मुअसस अर्रसाल 2014 ई)

उर्वा बिन ज़ुबैर से रिवायत है कि हज़रत बिलाल बिन रबाह रज़ि उन लोगों में से थे जो कमज़ोर समझे जाते थे। जब वह इस्लाम लाए तो उनको अज़ाब दिया जाता था ताकि वह अपने धर्म से फिर जाएं परन्तु उन्होंने उन लोगों के सामने कभी वह कलिमा अदा न किया जो वे चाहते थे अर्थात अल्लाह तआला का इन्कार करना। उन्हें उमय्या बिन ख़लफ अज़ाब दिया करता था।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 175 "बिलाल बिन रिबाह", दारुल कुतुब अल्इल्मिया 2017 ई)

हज़रत बिलाल रज़ि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए तो उनको तरह तरह का अज़ाब दिया जाता था। जब लोग हज़रत बिलाल रज़ि को अज़ाब देने में सख़्ती करते तो हज़रत बिलाल रज़ि अहद, अहद कहते। वे लोग कहते इस तरह कहो जिस तरह हम कहते हैं तो हज़रत बिलाल रज़ि जवाब में कहते कि मेरी ज़बान उसे अच्छी तरह अदा नहीं कर सकती जो तुम कह रहे हो। एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत बिलाल को जब कष्ट पहुंचाया जाता और मुशरिकीन यह इरादा करते कि उनको अपनी तरफ़ मायल कर लें तो हज़रत बिलाल रज़ि कहते अल्लाह , अल्लाह।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 175 "बिलाल बिन रिबाह", दारे अहया अत्तुरास बेरूत 2017 ई)

(उसदुल ग़ाबह भाग1 पृष्ठ 283 "बिलाल बिन रिबाह' दारुल फ़िक्र बेरूत 2003 ई)

एक रिवायत में है कि जब हज़रत बिलाल रज़ि ईमान लाए तो हज़रत बिलाल रज़ि को उनके मालिकों ने पकड़ कर ज़मीन पर लिटा दिया और उन पर कंकड़ पत्थर और गाय की खाल डाल दी और कहने लगे तुम्हारा रब लात और उज़्ज़ा है परन्तु आप अहद अहद ही कहते थे। उनके मालिकों के पास हज़रत अबू बकर रज़ि आए

और कहा कि कब तक तुम इस व्यक्ति को तकलीफ़ देते रहोगे। हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत बिलाल रज़ि को सात औक़िया में ख़रीद कर उन्हें आज़ाद कर दिया। औक़िया चालीस दिरहम का होता है अर्थात दो सौ अस्सी दिरहम में। फिर हज़रत अबू बकर रज़ि ने यह घटना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में बयान की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर! मुझे भी इसमें शरीक कर लो। हज़रत अबू बकर रज़ि ने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह मैं ने उसे आज़ाद कर दिया।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 175 "बिलाल बिन रिबाह' दारुल कुतुब अल्इल्मिया 2017 ई)

(लुग़ातुल अहादीस भाग 4 पृष्ठ 527 प्रकाशन अली आसिफ़ प्रिंटर्ज़ लाहौर)

हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत बिलाल रज़ि को ख़रीद कर अल्लाह की राह में आज़ाद किया था और ख़रीद के बारे में जैसा कि पहले वर्णन किया है दो सौ अस्सी दिरहम। कुछ रवायतों के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ि ने उन्हें पाँच औक़िया अर्थात दो सौ दिरहम में, कुछ के अनुसार सात औक़िया दो सौ अस्सी दिरहम और कुछ के अनुसार नौ औक़िया तीन सौ साठ दिरहम में ख़रीदा था।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा सजिल्द भाग 1 पृष्ठ 415 "बिलाल बिन रिबाह' दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2016 ई)

एक रिवायत में है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज़रत बिलाल रज़ि को ख़रीदा तो वह पत्थरों में दबे हुए थे। हज़रत अबू बकर रज़ि ने सोने के पाँच औक़िया के बदले उनको ख़रीदा। लोगों ने हज़रत अबू बकर रज़ि से कहा कि अगर आप सिर्फ एक औक़िया देने पर भी राज़ी होते अर्थात चालीस दिरहम तो हम एक औक़िया में भी इस को बेच देते। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने फ़रमाया अगर तुम उस को सौ औक़िया अर्थात चार हज़ार दिरहम में भी बेचने को तैयार होते तो मैं सौ औक़िया में भी इस को ख़रीद लेता।

(सैर अअ्लाम अलनबला ले इमाम अज़्ज़हबी भाग 1 पृष्ठ 353 ''बिलाल बिन रिबाह' मुअसस अर्रिसाला 2014 ई)

हज़रत आयशा रज़ि से रिवायत है कि हज़रत अबू बकर रज़ि ने सात ऐसे ग़ुलामों को आज़ाद करवाया जिन्हें कष्ट दिया जाता था। उनमें हज़रत बिलाल रज़ि और हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरह शामिल थे।

(अलमुस्तदरिक अला अस्सहीहैन लिल्हाकिम , ज़िक्र बिलाल बिन रिबाह, भाग 3 पृष्ठ 321 हदीस 5241 दारुल कुतुब अल्इल्मिया)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि से रिवायत है कि हज़रत उम्र रज़ि कहा करते थे कि अबू बकर रज़ि हमारे सरदार हैं और उन्होंने हमारे सरदार अर्थात बिलाल को आज़ाद किया।

(सही अल-बुख़ारी किताब फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाब मनाक़िब बिलाल बिन रिबाह मौला अबी बक्र हदीस 3754)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ि हज़रत बिलाल रज़ि को दी जाने वाली तकलीफ़ों और हज़रत अबू बकर रज़ि का आप को आज़ाद कराने की घटना का वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि

"यह ग़ुलाम जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाए विभिन्न क़ौमों के थे। उनमें हब्शी भी थे जैसे बिलाल रज़ि। रोमी भी थे जैसे सुहैब रज़ि। फिर उनमें ईसाई भी थे जैसे ज़ुबैर रज़ि और सुहैब रज़ि और मुशरिकीन भी थे जैसे बिलाल रज़ि और अम्मार रज़ि। बिलाल रज़ि को उनके मालिक तपती रेत पर लिटा कर ऊपर या तो पत्थर रख देते या नौजवानों को सीने पर कूदने के लिए निर्धारित कर देते। हब्शी नस्ल बिलाल रज़ि उमय्या बिन ख़लफ़ नामी एक मक्क के रईस के ग़ुलाम थे। उमय्या उन्हें दोपहर के वक़्त गर्मी के मौसम में मक्का से बाहर ले जा कर तपती रेत पर नंगा करके लिटा देता था और बड़े बड़े गर्म पत्थर उनके सीना पर रखकर कहता था कि लात और उज़्ज़ा के रब्ब होने को स्वीकार कर और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से अलग होने का इज़हार कर। बिलाल रज़ि इसके जवाब में कहते अहद अहद। अर्थात अल्लाह एक ही है। अल्लाह एक ही है। बार-बार आप का यह जवाब सुनकर उमय्या को और ग़ुस्सा आ जाता और वह आप के गले में रसा डाल कर शरारत करने वाले लड़कों के हवाले कर देता और कहता कि उनको मक्का की गलियों में पत्थरों के ऊपर घसीटते हुए ले जाएं। जिसके कारण से उनका बदन ख़ून से तर-ब-तर हो जाता परन्तु वह फिर भी अहद अहद कहते चले जाते । अर्थात ख़ुदा एक, ख़ुदा एक। बहुत समय के बाद जब ख़ुदा तआला ने मुस्लमानों को मदीना में अमन दिया, जब वे आज़ादी से इबादत करने के योग्य हो गए तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बिलाल रज़ि को अज़ान देने के लिए निर्धारित किया। यह हब्शी ग़ुलाम जब अज़ान में اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ के स्थान पर اَسْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहता तो मदीना के लोग जो उस के हालात से अपरिचित थे हँसने लग जाते। एक बार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन लोगों को बिलाल रज़ि की अज़ान पर हंसते हुए पाया तो आप लोगों की तरफ़ मुड़े और कहा तुम बिलाल रज़ि की अज़ान पर हंसते हो परन्तु ख़ुदा तआला अर्श पर इस की अज़ान सुनकर ख़ुश होता है। आप का इशारा इसी तरफ़ था कि तुम्हें तो यह नज़र आता है कि श'' नहीं बोल सकता परन्तु "श" और "स" में क्या रखा है। ख़ुदा तआला जानता है कि जब तपती रेत पर नंगी पीठ के साथ उस को लिटा दिया जाता था और उसके सीना पर ज़ालिम अपनी जूतियों समेत कूदा करते थे और पूछते थे कि क्या अब भी सबक़ आया है या नहीं? तो यह टूटी फूटी ज़बान में अहद अहद कह कर ख़ुदा तआला की तौहीद का ऐलान करता रहता था और अपनी वफ़ादारी, अपने तौहीद के अक़ीदा और अपने दिल की मज़बूती का सबूत देता था। अत: उसका असहदो बहुत से लोगों के अशहदो से ज़्यादा क़ीमती था। हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह अन्हो ने जब उन पर यह अत्याचार देखे तो उनके मालिक को उनकी क़ीमत अदा करके उन्हें आज़ाद करवा दिया। इसी तरह और बहुत से ग़ुलामों को हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह तआला अन्हु ने अपने माल से आज़ाद कराया।'

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन अन्वारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 193-194)

हज़रत बिलाल रज़ि की गिनती अलस्साबेक़ून अल् अव्वलून में होती है। आप ने उस समय इस्लाम का ऐलान किया जब सिर्फ सात आदमियों को इसके ऐलान की तौफ़ीक़ मिली थी।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 176 '' बिलाल बिन रिबाह'', दारुल कुतुब अल्इल्मिया 2017 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने बयान किया कि सबसे पहले जिन्होंने इस्लाम का ऐलान फ़रमाया वे सात हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अबू बकर रज़ि और अम्मार रज़ि और उनकी माता सुमय्या रज़ि और सुहैब रज़ि और बिलाल रज़ि और मिकदाद रज़ि। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तो अल्लाह तआला ने आपके चाचा अबूतालिब के द्वारा से महफ़ूज़ रखा और अबूबकर को अल्लाह तआला ने उनकी क़ौम के द्वारा से महफ़ूज़ रखा। जैसा कि मैं पिछले एक ख़ुत्बा में बयान कर चुका हूँ कि न ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुश्मनों के कष्टों से सुरक्षित रहे और न क़ौम हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो को ज़ुल्मों से बचा सकी। आप दोनों पर भी ज़ुल्मों की इंतिहा हुई थी। शुरू में कुछ अरसा नरमी हुई लेकिन बाद में तो बड़ी सख़्तियां होती रहीं लेकिन बहरहाल यह रावी का बयान है। बयान करने वाले कहते हैं कि उनका तो कोई न कोई स्पोर्ट करने वाला था। कोई बात कह देता था, आवाज़ उठा देता था लेकिन बाक़ियों को मुशरिकों ने पकड़ लिया जो कमज़ोर थे या ग़ुलाम थे और लोहे की ज़िरहें पहनाईं और उन्हें धूप में जलाते थे। अत: उनमें से कोई भी ऐसा न था जिसने उनके साथ जिसमें वे चाहते थे सहमति न कर ली हो सिवाए बिलाल के क्योंकि उन पर अपना नफ़्स अल्लाह के लिए बेहैसियत हो गया था। हज़रत बिलाल रज़ि थे जो हमेशा दृढ़ रहे और वह अपनी क़ौम के लिए भी बेहैसियत थे। वह उनको पकड़ते और लड़कों के सपुर्द कर देते और वह उन्हें मक्का की घाटियों में घुमाते फिरते और बिलाल रज़ि अहद अहद कहते जाते। यह इब्न माजा की रिवायत है।

(सुनन इब्ने माजा फ़ज़ाइल बिलाल हदीस 150 अनुवाद नूर फ़ाउंडेशन)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ि हज़रत बिलाल रज़ि के ज़माना में ईमान लाने का वर्णन करते हुए एक जगह यूं बयान फ़रमाते हैं कि ''हज़रत ख़ुब्बाब रज़ि जो अस्साबेक़ून अल्अव्वलून सहाबा रज़ि में से थे और जिनके बारे में यह मतभेद है कि उन्होंने पहले बैअत की या बिलाल रज़ि ने। क्योंकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार फ़रमाया कि एक ग़ुलाम और एक आज़ाद ने मुझे सबसे पहले क़बूल किया था। कुछ लोग इससे हज़रत बिलाल रज़ि और हज़रत अबू बकर रज़ि अभिप्राय लेते हैं और कुछ कहते हैं कि इससे अभिप्राय हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत ख़ब्बाब रज़ि हैं।'

(मिस्री साहिब के ख़िलाफ़त से इन्हिराफ़ के बारे में तक़रीर, अन्वारुल उलूम भाग 14 पृष्ठ 598)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ि ने 'सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत बिलाल रज़ि के कष्टों का वर्णन करते हुए जो बयान फ़रमाया है वह इस तरह है कि

"बिलाल बिन रिबाह, उमय्या बिन ख़लफ़ के एक हब्शी ग़ुलाम थे। उमय्या उनको दोपहर के वक़्त जबकि ऊपर से आग बरसती थी और मक्का का पथरीला मैदान भट्‌टी की तरह तपता था बाहर ले जाता और नंगा करके ज़मीन पर लिटा देता

और बड़े बड़े गर्म पत्थर उनके सीने पर रखकर कहता लात और उज़्ज़ा की उपासना कर और मुहम्मद से अलग हो जा, वर्ना इसी तरह अज़ाब देकर मार दूँगा। बिलाल रज़ि ज़्यादा अरबी न जानते थे। बस सिर्फ इतना कहते अहद अहद अर्थात अल्लाह एक ही है। अल्लाह एक ही है। और यह जवाब सुनकर उमय्या और तेज़ हो जाता और उनके गले में रसा डाल कर उन्हें बदमाश लड़कों के हवाले कर देता और वे उनको मक्का के पथरीली गलियों में घसीटते फिरते जिससे उनका बदन ख़ून से तर-ब-तर हो जाता परन्तु उनकी ज़बान पर सिवाए अहद अहद के और कोई शब्द न आता। हज़रत अबू बकर रज़ि ने उन पर यह अत्याचार देखा तो एक बड़ी क़ीमत पर ख़रीद कर उन्हें आज़ाद कर दिया।'

(सीरत ख़ातमन्नबय्यीन पृष्ठ 140)

हज़रत बिलाल रज़ि जब हिज्रत करके मदीना तशरीफ़ लाए तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने हज़रत सअद बिन ख़ैसमह: के घर क़ियाम किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि को हज़रत उबैदा बिन हारिस का भई बमाया जबकि एक दूसरी रिवायत के अनुसार आप ने हज़रत बिलाल को हज़रत अबू रुवैह: का भाई बनाया ।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 176 "बिलाल बिन रिबाह" दारुल कुतुब अल्इल्मिया 2017 ई)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना पहुंचे तो सहाबा वहां बीमार होने लगे जिनमें हज़रत अबू बकर रज़ि, हज़रत बिलाल रज़ि और हज़रत आमिर बिन फ़ुहैर: भी शामिल थे। हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह तआला अन्हा से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना आए। हज़रत अबू बकर रज़ि और हज़रत बिलाल रज़ि को बुख़ार हो गया। हज़रत अबू बकर रज़ि को जब बुख़ार होता तो यह शेअर पढ़ते। अरबी शेअर था उसका अनुवाद यह है कि हर व्यक्ति जब वह अपने घर में सुबह को उठता है तो उसे सबाह अलख़ैर कहा जाता है यहां तक कि मौत उस की जूती के तस्मे से निकट होती है और हज़रत बिलाल रज़ि जब उनका बुख़ार उतर जाता तो बुलन्द आवाज़ से रो कर यह शेअर पढ़ते जिसका अनुवाद यह है कि काश मुझे मालूम हो कि मैं कोई रात वादी मक्का में व्यतीत करूँगा और मेरे इर्द-गिर्द अज़ख़र और जलील घास हों और क्या मैं किसी दिन मजन्नह में पहुंच कर उसका पानी पियूँगा। मजन्नह भी मक्का से कुछ मील पर मर्रु ज़हरान के निकट एक स्थान है। ज़माना जाहिलीयत में अरब का एक मशहूर मेला मर्रु ज़हरान में उकाज़ के बाद लगता था और अरब के लोग उकाज़ के बाद मजन्नह स्थानान्तरित हो जाते और बीस दिन निवास करते थे। बहरहाल वह कहते हैं कि वहां मैं पानी पियूँगा और क्या शामह और तफ़ील पहाड़ मेरे सामने होंगे। शेअर में निवेदन कर रहे हैं, बयान कर रहे हैं। तफ़ील भी मक्का से लगभग दस मील पर एक पहाड़ है और इसके निकट एक और पहाड़ था जिसको शामह कहते थे। फिर हज़रत बिलाल रज़ि कहते कि हे अल्लाह!शैयब: बिन रिबय्या, उत्बा् बिन रिबय्या और उमय्या बिन ख़लफ पर लानत हो क्योंकि उन्होंने हमारी ज़मीन से हमें महामारी वाली ज़मीन की तरफ़ निकाल दिया है। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ की कि हे अल्लाह मदीना को हमें ऐसा ही प्यारा बना दे। जब हज़रत अबू बकर रज़ि की भी और हज़रत बिलाल रज़ि की भी ये बातें सुनीं तो आप ने फ़रमाया हे अल्लाह मदीना को हमें ऐसा ही प्यारा बना दे जैसा कि हमें मक्का प्यारा है या इससे बढ़कर। हे अल्लाह हमारे साए में और हमारे मुद्द में बरकत दे। यह साअ और मुद्द भी मशहूर पैमानों के नाम हैं। वज़न करने के लिए (प्रयोग) किए जाते हैं और मदीना को हमारे लिए सेहत वाला स्थान बना और इसके बुख़ार को जुहफ़ा की तरफ़ स्थान्तिरत कर दे। जुहफा भी एक दूसरा शहर है मक्का की तरफ। हज़रत आयशा रज़ि कहती थीं कि हम मदीना आए और वह अल्लाह की ज़मीन में सबसे ज़्यादा महामारी वाला स्थान था । उन्होंने कहा बुतहान नाले में थोड़ा सा पानी बहता था वह पानी भी बदमज़ा बदबू वालाथा। बुतहान भी मदीना की एक वादी का नाम है। यह बुख़ारी में रिवायत है।

(सही अल-बुख़ारी किताब फ़ज़ायल अल मदीना बाब कराहियतुन्नबी इन तअरल मदीनता हदीस 1889)

(उद्धरित लेखक फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 58, 180, 259 ज़व्वार अकैडमी पब्लीकेशन्ज़् (शमाइल न्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पृष्ठ 76 हाशिया)

(शरह जरक़ानी अला मुवाहिब अल्लदुन्निया भाग 2 पृष्ठ 172 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत)

जब कादियान से हिजरत हुई है तो उस वक़्त अहमदियों को खासतौर पर हजरत मदीना के हवाले से नसीहत करते हुए कि हमें इस हिज्रत से परेशान नहीं होना चाहिए , हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने हज़रत बिलाल रज़ि की इस घटना का हवाला देते हुए और इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद का वर्णन करते हुए उस वक़्त जमाअत को यह कहते हुए फ़रमाया था कि मैं दूसरों को तो नहीं जानता, दूसरों को तो नहीं कह सकता जो दूसरे लोग ग़ैर अहमदी मुस्लमान हिज्रत करके आए हैं लेकिन अहमदियों से यह कहता हूँ कि यह विचार छोड़ दो कि तुम लुटे हुए हो। तुमने हिज्रत की है और लुट पुट के आए हो। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन मुहाजिरीन पर अफ़सोस किया करते थे जो वतन और जायदादों के छूट जाने पर अफ़सोस करते थे। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब मदीना तशरीफ़ लाए उस वक़्त मदीना का नाम यसरब हुआ करता था और वहां मलेरिया बुख़ार भी बहुत अधिक होता था। मलेरिया फैलना शुरू हुआ तो मुहाजिरीन को बुख़ार चढ़े। उधर वतन की जुदाई का सदमा था। उनमें से कुछ ने रोना और चिल्लाना शुरू कर दिया कि मक्का! हाय मक्का एक दिन हज़रत बिलाल रज़ि को भी बुख़ार हो गया उन्होंने शेअर बना बना कर शोर मचाना शुरू कर दिया। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने देखा तो आप ख़फ़ा हुए और फ़रमाया कि क्या तुम ऐसे काम के लिए यहां आए हो? हिजरत की है तो शोर मचाना कैसा? हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अहमदियों को जो उस वक़्त हिजरत करके हिन्दुस्तान से पाकिस्तान आए थे, नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि मैं भी तुम्हें यह कहता हूँ कि ख़ुश रहो। तुम यह न देखो कि हमने क्या खोया है। तुम देखो कि हमने किस के लिए खोया है। अगर तुमने जो खोया वह ख़ुदा तआला के लिए और इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए खोया है तो तुम ख़ुश रहो और किसी अवसर पर भी अपनी कमरें टेड़ी न होने दो। तुम्हारे चेहरे दुखी न हों बल्कि उन पर ख़ुशी के चिन्ह पाए जाएं।

(उद्धरित लेखक कादियान से हमारी हिज्रत एक आसमानी तक़दीर थी, अनवार उल-उलूम भाग 21 पृष्ठ 379)

तो हम अहमदी तो इस सोच के रखने वाले थे और यह हमें उस वक़्त के ख़लीफ़ा ने नसीहत की थी कि हमारी हिज्रत अल्लाह तआला के लिए और इस्लाम की सेवा के लिए है। वे लोग जो पाकिस्तान की तामीर के ख़िलाफ़ थे, पाकिस्तान की नींव और बुनियाद के दावेदार बन कर अपने झूठ और फ़रेब से आज अहमदियों को इस देश के बुनियादी शहरी हुक़ूक़ से वंचित कर रहे हैं जिसके लिए सबसे ज़्यादा क़ुर्बानियां अहमदियों ने दें। जिस धर्म की बुलन्दी और सेवा के लिए हमने हिज्रत की पाकिस्तान की पार्लीमैंट ने अपने स्यासी उद्देश्यों के लिए इस धर्म का नाम लेने पर भी हम पर पाबंदी लगा दी। हमें बहरहाल उनकी किसी सनद की ज़रूरत नहीं है लेकिन हमें अफ़सोस इस बात पर ज़रूर होता है कि इन तथाकथित देश के ठेकेदारों ने अहमदियों पर ये ज़ुल्म करके सिर्फ अहमदियों पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि पाकिस्तान पर ज़ुल्म किया है और कर रहे हैं और दुनिया में देश की बदनामी का कारण बन रहे हैं। इसकी तरक़्क़ी में रोक बन रहे हैं। अगर ये लोग न हों जो देश को खा रहे हैं, दीमक की तरह चाट रहे हैं तो देश इस वक़्त तरक़्क़ी करके कहीं का कहीं पहुंच चुका हो लेकिन इसके बावजूद हम पाकिस्तानी अहमदियों का यह काम है, खासतौर पर जो पाकिस्तान में रहने वाले हैं ,कि देश की तरक़्क़ी के लिए अपनी समस्त योग्यताओं के साथ कोशिश करते रहें और दुआ करें कि अल्लाह तआला इन ज़ालिमों से इस देश को साफ करे। बहरहाल यह घटना आई तो इस के अन्तर्गत वर्णन हो गया। अब मैं दोबारा हज़रत बिलाल रज़ि की तरफ़ की घटनाएं, रवायतें वर्णन करता हूँ।

तबक़ातुल कुबरा में लिखा है हज़रत बिलाल रज़ि बदर, उहद और ख़न्दक़ सहित समस्त जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 180 '' बिलाल बिन रिबाह'', दारुल कुतुब अल्इल्मिया 2017 ई)

जंगे बदर में हज़रत बिलाल रज़ि ने उमय्या बिन ख़लफ़ को क़तल किया जो इस्लाम का बहुत बड़ा दुश्मन था और हज़रत बिलाल रज़ि को इस्लाम लाने पर दुख दिया करता था।

(उद्धरित लेखक सैरुस्सहाबा भाग 2 ''बिलाल बिन रिबाह' पृष्ठ 156 दारुल इशाअत उर्दू बाज़ार कराची 2004 ई)

उमय्या बिन ख़लफ के क़तल की घटना सही बुख़ारी में वर्णन हुई है जिसका विस्तार ख़ुबैब बिन असाफ के वर्णन में मैं पहले बयान कर चुका हूँ। परुन्तु यहां भी कुछ वर्णन कर देता हूँ क्योंकि उसका सीधा सम्बन्ध हज़रत बिलाल रज़ि के साथ भी है।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि से रिवायत है, वह बयान करते हैं कि मैं ने उमय्या बिन खिलफ को ख़त लिखा कि वह मक्का में, जो उस वक़्त दारुल हरब था ,मेरे माल और बाल बच्चों की हिफ़ाज़त करे और मैं उसके माल तथा सामान की मदीना में हिफ़ाज़त करूँगा। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि का इससे पुराना

सम्बन्ध था। उमय्या बिन खिलफ बदर की जंग में भी शामिल हुआ। काफ़िरों की फ़ौज में काफ़िरों के साथ आया था और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि को इसके बदर में शामिल होने का इल्म हो गया था। इस पुराने सम्बन्ध की वजह से वह इस पर उपकार करके जंग के बाद रात को इसको बचाना भी चाहते थे। अत: वह बयान करते हैं कि जब वह बदर की जंग में था तो जब लोग सो चुके थे मैं एक पहाड़ की तरफ़ निकल गया ताकि मैं उसकी सुरक्षा करूँ क्योंकि पता था कि उस तरफ़ कहीं गया हुआ है तो मैं भी गया ताकि उसको हिफ़ाज़त करके बचा लूं। हज़रत बिलाल रज़ि ने उस वक़्त उसे कहीं देख लिया। अत: हज़रत बिलाल रज़ि गए और अन्सार की एक मज्लिस में खड़े हो गए और कहने लगे कि यह उमय्या बिन ख़लफ है अगर बच निकला तो मेरी ख़ैर नहीं। इस पर बिलाल रज़ि के साथ कुछ लोग हमारे पीछे निकले। मैं डरा कि वे हमें पा लेंगे, पकड़ लेंगे। इसलिए मैंने उसके बेटे को उसके लिए पीछे छोड़ दिया कि वे उसके साथ लड़ाई में व्यस्त हो जाएं और हम ज़रा आगे निकल जाएं। कहते हैं अत: उन्होंने इस बेटे को तो लड़ाई में मार दिया। मेरा यह दाव जो था वह कारगर नहीं हुआ और उसको मार के फिर उन्होंने हमारा पीछा शुरू कर दिया और उमय्या चूँकि भारी भरकम आदमी था इसलिए शीघ्र इधर उधर नहीं हो सकता था। आख़िर जब उन्होंने हमें पकड़ लिया, क़रीब पहुंच गए तो मैंने उसे कहा कि बैठ जाओ तो वह बैठ गया और मैंने अपने आपको उस पर डाल दिया कि उसे बचाऊं तो उन्होंने जो पीछा कर रहे थे मेरे नीचे से उसके बदन में तलवारें घोंपीं यहां तक कि उसे मार डाला। उनमें से एक ने अपनी तलवार से मेरे पांव पर ज़ख़्म भी कर दिया।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल वकालत बाब इज़ा वकलल मुस्लेमो अन्त तक...... हदीस 2301)

एक दूसरी रिवायत में यह घटना इस तरह वर्णन है। इस का कुछ हिस्सा बयान कर देता हूँ। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि कहते हैं कि मैं उन दोनों अर्थात उमय्या बिन खिलफ और इसके बेटे को लेकर चल रहा था कि अचानक हज़रत बिलाल रज़ि ने उमय्या को मेरे साथ देख लिया। मक्का में उमय्या हज़रत बिलाल रज़ि को इस्लाम से फेरने के लिए बड़ा अज़ाब दिया करता था। हज़रत बिलाल रज़ि उमय्या को देखते ही बोले। काफ़िरों का सरदार उमय्या बिन ख़लफ़ यहां है। अगर यह बच गया तो समझो मैं नहीं बचा। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि कहते हैं कि यह सुनकर मैं ने कहा तुम मेरे क़ैदियों के बारे में ऐसा कह रहे हो? हज़रत बिलाल रज़ि ने बार-बार यही कहा और मैं भी हर बार यही कहता रहा कि यह मेरे क़ैदी हैं। हज़रत बिलाल रज़ि बुलन्द आवाज़ से चिल्लाए। उन्होंने शोर मचा के आवाज़ दी कि हे अल्लाह के अन्सार! यह काफ़िरों का सरदार उमय्या बिन ख़लफ़ है। अगर यह बच गया तो समझो मैं नहीं बचा और बार-बार ऐसा कहा। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ कहते हैं कि यह सुनकर अन्सारी दौड़ पड़े और उन्होंने हमें चारों तरफ़ से घेर लिया। फिर हज़रत बिलाल रज़ि ने तलवार सौंत कर उमय्या के बेटे पर हमला किया जिसके नतीजा में वह नीचे गिर गया। उमय्या ने इस पर ख़ौफ़ के कारण से ऐसी भयानक चीख़ मारी कि ऐसी चीख़ मैंने कभी नहीं सुनी थी। इसके बाद अन्सारियों ने इन दोनों को तलवारों के वार से काट डाला।

(अस्सीरतुल हलिबया भाग 2 पृष्ठ 232-233 बाब ज़िक्र मुग़ाज़ी ग़ज़व बदर अलकुबरा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत)

एक रिवायत में यह आता है कि हज़रत बिलाल रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सैक्रेटरी या ख़ज़ानची भी थे।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफितस्सहाबा सजिल्द भाग 1 पृष्ठ 415 "बिलाल बिन रिबाह' दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2016 ई)

हज़रत इब्न अब्बास रज़ि अल्लाह तआला अन्हो से एक व्यक्ति ने पूछा क्या आप (स) भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ किसी सफ़र में सम्मिलित हुए हैं। उन्होंने कहा अगर मेरा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सम्बन्ध न होता तो मैं सम्मलित न होता। इससे उनका अभिप्राय यह था कि छोटे होने के कारण से उन्हें यह अवसर मिला। रिश्तेदारी थी इसलिए सफ़र में सम्मिलित हुए थे। फिर कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस निशान के निकट आए जो कि हज़रत कसीर बिन सलत के घर के निकट था और सहाबा को ख़िताब फ़रमाया। फिर आप औरतों के पास आए और उन्हें नसीहत की। और उन्हें सदक़ा देने के लिए फ़रमाया तो औरतें अपने हाथों को झुका झुका कर अपनी अँगूठियां उतारतीं और हज़रत बिलाल रज़ि के कपड़ों में डालती जाती थीं। हज़रत बिलाल रज़ि साथ थे। जो चादर थी इस में वे डालती जाती थीं। यह रिवायत हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि ने बयान की है। इसके बाद आप और हज़रत बिलाल रज़ि घर आए।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल आज़ान बाब वुज़ू सिबयान व मता युहिब्बो अलैहिम अल-ग़ुसल .... हदीस 863)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे फ़रमाया कि मुझे अल्लाह के लिए इतने कष्ट दिए गए जितने किसी को नहीं दिए जा सकते। मुझे अल्लाह के लिए इतना डराया गया है जितना किसी को नहीं डराया जा सकता। और मुझ पर तीसरी रात आ जाती कि मेरे और बिलाल रज़ि के पास कोई ऐसा खाना न होता जिसे कोई जानदार खा सके परन्तु इतना जिसे बिलाल की बग़ल छुपा सकती। बहुत थोड़ा मामूली खाना होता था।

(सुनन इब्न माजा अबवाबुल मनाक़िब बाब फ़ज़ाइल बिलाल रज़ि हदीस151 अनुवाद नूर फ़ाउंडेशन रब्वह)

हज़रत बिलाल रज़ि को सबसे पहला मुअज़्ज़िन होने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। हज़रत बिलाल रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सारी ज़िन्दगी में उनके लिए सफ़र तथा ठहराव में मुअज़्ज़िन रहे और आप इस्लाम में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अज़ान दी।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफितस्सहाबा सजिल्द भाग 1 पृष्ठ 416 "बिलाल बिन रिबाह' दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2016 ई)

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अपने पिता से रिवायत करते हैं। उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ के बुलाने के लिए बिगुल का सोचा। फिर नाक़ूस का इरशाद फ़रमाया। अत: वह बनाया गया। यह बुख़ारी की हदीस है और इसके अनुसार बूक़ और नाक़ूस के प्रयोग का मश्वरा सहाबा ने दिया था। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि को ख़्वाब दिखाई गई। उन्होंने बताया कि मैंने ख़्वाब में एक आदमी देखा जिस पर दो हरे कपड़े थे और वह आदमी नाक़ूस उठाए हुए था। मैंने उसको ख़्वाब में ही कहा हे अल्लाह के बंदे! तुम यह नाक़ूस बेचोगे? उसने कहा तुम इससे क्या करोगे? मैंने कहा में इसके द्वारा नमाज़ के लिए बुलाया करूँगा। उसने कहा क्या मैं तुझे इससे बेहतर न बताऊं। मैंने कहा वह क्या है? उसने फिर वह अज़ान के शब्द सुनाए अलल्लाहो अक़बर अलल्लाहो अक़बर और पूरी अज़ान।

أَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ۔ أَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۔ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللّٰهِ۔أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللّٰه۔ حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ۔ حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ۔ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ۔ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ۔ اللّٰهُ أَكْبَرُ اللّٰهُ أَكْبَرُ۔ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ۔

रावी कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि निकले और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी रोया बताई। उन्होंने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल! मैंने ख़्वाब में एक आदमी देखा। इस पर दो हरे कपड़े थे। वह नाक़ूस उठाए हुए था। फिर सारी बात आप के सामने बयान की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया। तुम्हारे दोस्त ने रोया देखी है। फिर अब्दुल्लाह बिन ज़ैद को इरशाद फ़रमाया तुम बिलाल रज़ि के साथ मस्जिद जाओ और उसे ये शब्द बताते जाओ और वह उनको बुलन्द आवाज़ से पुकारें क्योंकि तुम्हारी तुलना में वह ज़्यादा बुलन्द आवाज़ वाले हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि ने कहा कि मैं बिलाल रज़ि के साथ मस्जिद की तरफ़ गया और में उन्हें यह शब्द बताता जाता और वह बुलन्द आवाज़ के साथ पुकारते जाते। हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि ने आवाज़ सुनी। वह बाहर तशरीफ़ लाए और उन्होंने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह !ख़ुदा की क़सम मैंने भी ख़्वाब में वही देखा जो उन्होंने देखा।

(सुनन इब्न माजा किताब अल्अज़ान बाब बदउल अज़ान हदीस 706)

(सही अल-बुख़ारी किताबुल अज़ान बाब बदउल अज़ान हदीस 604)

इसको बयान करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने लिखा है कि

"अभी तक नमाज़ के लिए ऐलान या अज़ान इत्यादि का प्रबन्ध नहीं था। सहाबा प्राय वक़्त का अन्दाज़ा करके ख़ुद नमाज़ के लिए जमा हो जाते थे लेकिन यह अवस्था कोई सन्तोष जनक नहीं थी। अब मस्जिद नब्वी के तैयार हो जाने पर यह सवाल ज़्यादा महसूस तौर पर पैदा हुआ कि किस तरह मुसलमानों को समय पर जमा किया जाए। किसी सहाबी ने इसाइयों की तरह नाक़ूस की राय दी। किसी ने यहूद के उदाहरण में बूक़ का परामर्श पेश किया। किसी ने कुछ कहा परन्तु हज़रत उमर रज़ि ने मश्वरा दिया कि किसी आदमी को निर्धारित कर दिया जाए कि वह नमाज़ के वक़्त यह ऐलान कर दिया करे कि नमाज़ का वक़्त हो गया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस राय को पसन्द फ़रमाया और हज़रत बिलाल रज़ि को हुक्म दिया कि वह इस फ़र्ज़ को अदा किया करें। अत: इसके बाद जब नमाज़ का वक़्त आता था बिलाल रज़ि बुलंद आवाज़ से اَلصَّلٰوةُ جَامِعَةٌ कह कर पुकारा करते थे और लोग जमा हो जाते थे बल्कि अगर नमाज़ के इलावा भी किसी

उद्देश्य के लिए मुसलमानों को मस्जिद में जमा करना होता था तो यही आवाज़ दी जाती थी। इसके कुछ समय के बाद एक सहाबी अब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी रज़ि को ख़्वाब में मौजूदा अज़ान के शब्द सिखाए गए और उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर अपने इस ख़्वाब का वर्णन किया और निवेदन किया कि मैंने ख़्वाब में एक आदमी को अज़ान के तरीक़ा पर यह शब्द पुकारते सुना है। आप ने फ़रमाया यह ख़्वाब ख़ुदा की तरफ़ से है और अब्दुल्लाह रज़ि को हुक्म दिया कि बिलाल रज़ि को यह शब्द सिखा दें। अजीब संयोग यह हुआ कि जब बिलाल रज़ि ने शब्दों में पहली बार अज़ान दी तो हज़रत उमर रज़ि उसे सुनकर जल्दी जल्दी आप की सेवा में हाज़िर हुए और निवेदन किया कि रसूलुल्लाह आज जिन शब्दों में बिलाल रज़ि ने अज़ान दी है ठीक यही शब्द मैंने भी ख़्वाब में देखे हैं। और एक रिवायत में यह है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अज़ान के शब्द सुने तो फ़रमाया कि इसी के अनुसार वह्यी भी हो चुकी है। अत: इस तरह मौजूदा अज़ान का तरीक़ा जारी हो गया और जो तरीक़ा इस तरह जारी हुआ वह ऐसा मुबारक और प्यारा है कि कोई दूसरा तरीक़ा उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता। मानो हर-रोज़ पाँच वक़्त इस्लामी दुनिया के हर शहर और हर गांव में हर मस्जिद से ख़ुदा की तौहीद और मुहम्मद रसूलुल्लाह की रिसालत की आवाज़ बुलंद होती है और इस्लामी शिक्षाओं का सार निहायत सुन्दर और सारगर्भित शब्दों में लोगों तक पहुंचा दिया जाता है।"

(सीरत ख़ातमन्निबय्यीन पृष्ठ 271-272)

मूसा बिन मुहम्मद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ि अज़ान देकर फ़ारिग़ हो कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना देना चाहते तो आप के दरवाज़े पर खड़े हो जाते और कहते

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ۔ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ۔ اَلصَّلٰوةُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

अर्थात नमाज़ के लिए आईए, सफलता तथा कामयाबी के लिए आए। नमाज़, हे रसूलुल्लाह। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ के लिए निकलते और हज़रत बिलाल रज़ि देख लेते तो इक़ामत शुरू कर देते।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 176-177 "बिलाल बिन रिबाह", दारुल कुतुब अल्इल्मिया 2017 ई)

यह स्पष्ट नहीं है। इक़ामत तो उसी वक़्त होगी जब इमाम मेहराब में आ जाए। बहरहाल जो भी है। रिवायत का सही अनुवाद नहीं है या यह बयान सही नहीं है लेकिन असल तरीक़ा वही है जो मेहराब में इमाम आ जाए तो फिर इक़ामत हो।

सुनन इब्ने माजा में हज़रत बिलाल रज़ि से रिवायत है कि वह नमाज़ फ़ज्र की सूचना देने के लिए नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। उनसे कहा गया कि आप सोए हुए हैं तो हज़रत बिलाल ने कहा।

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ۔ اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ۔

फिर फ़ज्र की अज़ान में इन शब्दों की वृद्धि की गई और यही तरीक़ा क़ायम हो गया।

(सुनन इब्न माजा किताबुल अज़ान बाबुल सुन्नत फिल अज़ान हदीस 716)

एक दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे बिलाल रज़ि ये कितने उत्तम शब्द हैं। तुम उन्हें अपनी फ़ज्र की अज़ान में शामिल कर लो।

(मोअज्जमुल कबीर लित्तबरानी बाब बिलाल बिन रबह भाग 01 पृष्ठ 355 हदीस 1081 दारे अहया अत्तुरास अलअरबी 2002)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तीन मुअज़्ज़िन थे। हज़रत बिलाल रज़ि, अबू महज़ूरह, अम्रो बिन उम्मे मक्तूम।

(अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 177 "बिलाल बिन रिबाह", दारुल कुतुब अल्इल्मिया 2017 ई)

अभी उनका कुछ थोड़ा और वर्णन बाक़ी है जो इंशा अल्लाह आइन्दा। इस समय मैं ने कुछ मरहूमीन के बारे में भी बताना है। उनके जनाज़े होंगे। इसलिए बाक़ी वर्णन फिर इंशा अल्लाह आइन्दा करेंगे।

पहला जो वर्णन है वह प्रिय रऊफ़ बिन मक़सूद जूनीयर बेल्जियम का है। यह जामिया अहमदिया यूके के छात्र थे। 4 सितम्बर को उनका देहान्त हो गया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। बेल्जियम की जमाअत हासिल्ट (Hasselt) से उनका सम्बन्ध था। 2018 ई में जामिया में दाख़िल हुए थे और वहां का अपना सेकण्डरी स्कूल ख़त्म करके यहां आए थे। प्रिय अपनी ख़ुलूस से भरपूर तबीयत, मानव सेवा की भावना और मेहनत की आदत के कारण से छात्रों और टीचरों में बहुत हर दिल अज़ीज़ थे। कुछ देर पहले उनको ब्रेन टयूमर (Braim Tumor) हुआ था। छ: सात माह यह बीमार रहे। बड़े सब्र और बहादुरी से बीमारी का मुक़ाबला किया। आख़िर अल्लाह को प्यारे हो गए।

उनके दादा के माध्यम से शायद 1950 ई में उनके ख़ानदान में अहमदियत आई थी और उन के दादा का अच्छा प्रभाव था। उस समय तो रिश्तेदारों ने और विरोधियों ने कुछ नहीं कहा लेकिन उनके देहान्त के बाद उनकी फ़ैमली को बहुत विरोध का सामना करना पड़ा। उनकी माता की तरफ़ से भी उनके पड़नाना अब्दुल अली साहिब और उनकी पत्नी ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के हाथ पर बैअत की थी। रऊफ़ बिन मक़सूद साहिब के जो पीछे रहने वाले हैं उनमें माता पिता के इलावा तीन बहनें और दो भाई शामिल हैं। हुमायूँ मक़सूद साहिब पिता हैं मुहसिना बेगम साहिबा माता हैं। अज़ीज़ा निशात बेटी है उम्र अठारह साल। प्रिय सालिह बेटा है उम्र चौदह साल। अज़ीज़ा तस्निया हुमैज़ा यह नौ साल की है। प्रिय फ़ातिह बिन मक़सूद सात साल का है। अज़ीज़ा जन्नतुस्सामिया चार साल की है।

बेल्जियम के अमीर साहिब लिखते हैं कि मुझे बचपन से उन्हें देखने का मौक़ा मिला और प्रिय को ग़ैरमामूली बच्चा पाया। जब भी प्रिय की जमाअत में जाने का अवसर मिला उस को हमेशा मस्जिद के साथ जुड़ा हुआ और अच्छे आचरण वाला पाया। वफ़ात के बाद दो दिन बैयतुर्रहीम आलकन में अफ़सोस के लिए आने वाले लोगों का प्रबन्ध किया हुआ था। जमाअत से बड़ी संख्या में लोग इस में शामिल हुए और उनमें बहुत से लोग को रोते देखा। इन सब ने प्रिय की बेशुमार घटनाएं बताईं। बीमारी के शुरू में डाक्टर ने उनको बता दिया था कि उनको ब्रेन कैंसर है जो कि ज़िन्दगी के लिए ख़तरनाक हो सकता है लेकिन इसके बावजूद कभी न तो उनके चेहरे पर मायूसी आई और ना हिम्मत छोड़ी। डाक्टर के साथ मीटिंग में एक डाक्टर ने कहा कि जब महोदय बोल सकते थे तो उनसे मेरी गुफ़्तगु होती रही। मैंने उनको बहुत ग़ैरमामूली नौजवान और रोशन दिमाग़ पाया। डाक्टरों का यह भी कहना है कि महोदय ने बहुत तकलीफ़ वाली बीमारी में भी कभी कोई शिकायत नहीं की। डाक्टरों के नज़दीक इस हालत में मरीज़ को कई बार बहुत अधिक क्रोध आ जाता है लेकिन उन्होंने बड़ी हिम्मत दिखाई और सब्र का प्रदर्शन किया। अमीर साहिब फिर लिखते हैं कि प्रिय कमाल दर्जा की ख़िलाफ़त से मुहब्बत रखने वाले और पूर्ण इताअत करने वाले थे। हमेशा चेहरे पर मुस्कुराहट रहती थी और हर एक से चाहे छोटा हो या बड़ा, बड़े सम्मान और अच्छे आचरण से व्यवहार करते थे।

हासिल्ट के मुरब्बी साहिब कहते हैं कि बीमारी के बारे में जानने से पहले मैं ने रमज़ान में उनसे इतफ़ाल की क्लासें ऑनलाइन लेने के लिए कहा तो बड़ा नियमित यह कक्षाएं लेते रहे यहां तक कि जब इस बीमारी से हस्पताल दाख़िल हुए तो बीमारी के बावजूद हस्पताल से बच्चों की क्लास लेते रहे यहां तक कि कई बार क्लास लेते लेते बेहोशी की कैफ़ीयत छा जाती थी और फिर जब तबीयत सँभलती तो दोबारा क्लास शुरू कर देते। कभी यह नहीं कहा कि मैं कष्ट में हूँ, क्लास नहीं ले सकता। इतफ़ाल ने भी इस का इज़्हार किया कि जब आपको तकलीफ़ है तो क्लास न लें तो महोदय ने हमेशा ये कहा कि जब वापस जामिया खुलेगा तो मैं जा के ख़लीफ़तुल मसीह को क्या जवाब दूँगा कि मैंने छुट्टियों के दौरान क्या जमाअत की सेवा की है। एक शौक़ था। एक भावना था। एक लग्न थी।

फिर दूसरे मुरब्बी सिलसिला हैं वह लिखते हैं कि 2010 ई में एक सप्ताह के लिए उन्होंने वक़्फ़े आरिज़ी किया। उस वक़्त उनको उनके पिता मेरे पास छोड़ गए कि यहां रहेंगे क्योंकि उसने जामिया में जाना है इस की ट्रेनिंग करें। कहते हैं उस वक़्त भी मैं ने इस को देखा कि पाँच नमाज़ों की अदायगी के इलावा सुबह उठकर नमाज़ तहज्जुद की भी अदायगी किया करते थे। मस्जिद आलकिन (Alken)जब तामीर या उस की रेनोवेशन हो रही थी, तब्दीली हो रही थी तो उस वक़्त उन्होंने बाक़ायदा वकारे अमल में हिस्सा लिया और सैक्रेटरी जायदाद कहते हैं कि बड़ा मुश्किल और भारी काम पत्थर उठाने, बजरी उठाने इत्यादि का अपने ज़िम्मा लेते थे और बड़ी ख़ुशी से यह काम करते थे और एक ख़ूबी उनमें यह थी कि सबको सलाम करने में पहल करते थे। उनकी माता बताती हैं कि दूसरों को अपने ऊपर प्राथमिकता दिया करते थे। आम तौर पर स्कूल अपना खाना लेकर जाते और वहां खा कर आया करते थे। एक दिन घर आ के माता को कहा कि मुझे खाना दें। मैं ने कहा कि तुम ले कर तो गए थे तो उन्होंने कहा एक बच्चा खाना नहीं ले के आया था तो उसे मैं ने अपना खाना दे दिया कि मैं घर में जा के खा लूंगा। इसी तरह अपने दोस्तों के बारे में फ़िक्रमंद रहते और उनको कहा करते थे कि मुझे तुम्हारे भविष्य की चिन्ता रहती है। अपने जो क़रीबी थे उनको कहा करते थे कि अच्छे आचरण वाले दोस्त चुनो और अपने भविष्य को बेहतर बनाने की कोशिश करो। इज्तिमाओं इत्यादि, जलसे इत्यादि में लगन से डयूटी दिया करते थे बल्कि उनके अफ़्सर कहते हैं कि एक बार उनकी सेक्योरिटी

की डयूटी थी मैं ने रात को कुछ खाने को पेश किया तो महोदय ने कहा पहले जो मेरे साथी हैं उनको दे दें। कुछ माता पिता को जिनके बच्चे वक़्फ़े नौ में शामिल हैं उनसे भी बावजूद छोटे होने के प्राय पूछते रहते थे और नसीहत किया करते थे कि कोशिश करें कि आपका बच्चा जामिया में जाए।

उनकी माता ने भी बल्कि दोनों माता पिता ने , पिता ने और माता ने भी, बड़ी हिम्मत से उनकी बीमारी का यह समय गुज़ारा है। माता उनसे कहा करती थीं कि हमने तुम्हें ख़ुदा की राह में वक़्फ़ कर दिया था अब भी जहां तुम जा रहे हो, डाक्टरों ने मायूसी का इज़हार किया था और कोई उम्मीद नहीं थी तो बड़े हौसले से उन्होंने कहा वह जगह जहां तुम अब जा रहे हो, वह भी बड़ी अच्छी जगह है। और अल्लाह की रज़ा पर राज़ी रहने की नसीहत करती रहीं। वह ख़ुद भी अल्लाह की रज़ा पर राज़ी थे। फिर उन्होंने अपनी एक तस्वीर जो मेरे साथ खिंचवाई हुई थी हस्पताल में अपने बैड के सामने रखवाली जो अक्सर तब्लीग़ का माध्यम बनती और डाक्टर पूछते थे कि कौन सी कम्यूनिटी से तुम्हारा सम्बन्ध है? उनको बताया जाता कि हम जमाअत अहमदिया से हैं और इस बात को स्वीकार करते हैं कि मसीह जो आने वाला था वह आ गया है इस पर आगे तब्लीग़ चलती थी। अमीर साहिब कहते हैं कि मैं उन्हें कहा करता था कि तुम बेशक बीमार हो लेकिन इसके बावजूद तब्लीग़ का माध्यम बन रहे हो और इस बात पर बड़े ख़ुश होते थे।

फिर सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया बेल्जियम कहते हैं कि उनको ख़िलाफ़त से इंतिहा का इश्क़ था। कहते हैं एक दिन मैंने इतफ़ाल और वक़्फ़े नौ की क्लास में ख़लीफ़ा वक़्त को ख़त लिखने के लिए कहा और ख़त लिखवाए तो महोदय मेरे पास आए और कहने लगे मुरब्बी साहिब मुझे उर्दू में ख़त लिखना नहीं आता। मुझे आप लिख के दें में नक़ल कर लूँगा। फिर उसको देख देख के हाथ से लिखूँगा। तो मैं ने उसे कहा कि बाक़ी बच्चे डच में लिख रहे हैं तुम भी लिख दो। यह जामिआ आने से पहले की बात है। तो महोदय ने जवाब दिया कि मैं चाहता हूँ कि मेरा ख़त सीधा समय के ख़लीफ़ा तक पहुंचे और वह मेरे लिए दुआ करें। फिर यह मुरब्बी साहिब कहते हैं कि प्रिय रऊफ़ बिन मक़सूद जो खड़े हो कर यह अह्द करते थे कि मैं अपनी जान और माल और वक़्त और इज़्ज़त को क़ुर्बान करने के लिए हर-दम तैयार रहूँगा तो महोदय ने यह वादा आख़िरी सांस तक पूरा किया। बहुत बड़ी संख्या उनके जमाअत से बाहर बेलज़ दोस्तों की थी और कहते हैं कि मैंने अपनी आँखों से उन्हें बिलक बिलक कर रोते देखा है। जब मैंने एक दोस्त से प्रिय रऊफ़ बिन मक़सूद के बारे में पूछा तो वे रोते हुए कहने लगे कि आज हमारा बहुत ही प्यारा और ख़्याल रखने वाला दोस्त हमसे जुदा हो गया। कहते हैं कि ऐसे हमदर्द दोस्त भी किसी किसी को मिलते हैं।

फिर तब्लीग़ का बड़ा शौक़ था। यह कहते हैं कि Messiah has come की हमने तहरीक शुरू की तो जहां कई बार दूसरे लोग हिचकिचाते थे यह पकड़ पकड़ के लोगों को ले के आते थे और उनको तब्लीग़ी लिट्रेचर देते थे और गुफ़्तगु करवाते थे और मेहमानों का परिचय भी करवाते। हर तब्लीग़ी बैठक में मेहमान भी ले के आते। बहरहाल यह जामिया पास करने से पहले ही बेहतरीन मुरब्बी और मुबल्लिग़ थे। अल्लाह तआला अपने फ़ैसलों की हिक्मत ख़ुद जानता है। कई बार बेहतरीन इन्सानों को जल्दी अपने पास बुला लेता है। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और दर्जात बुलंद करे। उनके माता पिता को भी सब्र और हौसला प्रदान फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा ज़फ़र इक़बाल क़ुरैशी साहिब का है जो भूतपूर्व नायब अमीर ज़िला इस्लामाबाद थे। ये तीन सितम्बर को 87 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। एक मुख़लिस ख़ानदान से उनका सम्बन्ध था और आपके दादा उबैदुल्लाह क़ुरैशी साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे जिन्होंने 1904 ई में बैअत की थी। अमतुल हमीद साहिबा जो आपकी पत्नी हैं उनके दादा हज़रत ख़लीफ़ा नूरुद्दीन साहिब भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक सहाबी थे। यह ख़लीफ़ा नूरुद्दीन अन्य हैं उनका नाम है ख़लीफ़ा नूरुद्दीन। यह हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल नहीं हैं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपनी महान पुस्तक "तोहफ़ा गोलड़विया" में मुहल्ला खानियार श्रीनगर कश्मीर में स्थित क़ब्र मसीह की मौजूदगी की तहक़ीक़ करने के सिल्सिला में आपकी सेवा का विशेष रूप से वर्णन फ़रमाया है। ज़फ़र इक़बाल क़ुरैशी साहिब ने आरम्भिक शिक्षा अमृतसर में हासिल की। फिर जब पार्टीशन हिन्दुस्तान पाकिस्तान का हुआ है तो उस वक़्त फिर उन्होंने पिंडी आकर वहां से मैट्रिक की। फिर इंजनीयरिंग यूनीवर्सिटी से डिग्री ली। फिर सरकारी नौकरी में चले गए। फिर यूनान से ऐम. एस. सी की डिग्री उन्होंने प्राप्त की। इसके बाद टेक्सला में यूनीवर्सिटी प्राजैक्ट मैनेजर की हैसियत से सेवाएं कीं। 1994 ई में यह चीफ़ इंजीनियर की हैसियत से सरकारी सर्विस से रिटायर्ड हुए। इसके बाद ये इस्लामाबाद शिफ़्ट हो गए और वहां विभिन्न जमाअत की सेवाएं सरअंजाम देते रहे। और फिर यह 1998 ई में नायब अमीर बनाए गए। इस दौरान में विभिन्न समयों में क़ायम मुक़ाम अमीर भी बनते रहे और 2019 ई तक इक्कीस साल से अधिक समय नायब अमीर की हैसियत से उन्होंने काम किया। बड़ी उम्र में बीमारियां लग गई थीं तो बावजूद बीमारी के बाक़ायदगी से मस्जिद आते। अपना दैनिक काम करते। बहुत कम बोलने वाले और राय देने वाले थे और विभिन्न विभागों में भी काफ़ी अनुभव था। बड़ी संजीदगी से सावधानी से काम करने वाले, जमाअत के पैसे का दर्द रखने वाले और बहुत एहसास करने वाले थे। मैं जब नाज़िर आला था तो उस वक़्त मैंने उनको निकट से देखा है माशा अल्लाह बड़ी बे-नफ़सी और विनम्रता से यह काम करते थे और जो उनके अफ़्सर थे उम्र में बहुत ज़्यादा छोटे थे उनकी भी पूर्ण इताअत किया करते थे।

उनके पीछे रहने वालों में पत्नी अमतुल हमीद ज़फ़र साहिबा के इलावा चार बेटियां अमतुल रशीद साहिबा,डाक्टर सदफ़ ज़फ़र साहिबा , शाज़िया चौधरी साहिबा और आयशा तारिक़ साहिबा शामिल हैं। एक लाहौर में है बाक़ी कैनेडा में हैं।

एक बेटी आयशा ज़फ़र कहती हैं कि बचपन में जब स्कूल जाना शुरू किया तो सालाना इम्तिहान से पहले ख़लीफ़ा की सेवा में मेरी तरफ़ से दुआ का ख़त लिखते। फिर जब पोज़ीशन आती तो दोबारा ख़त लिखते और जब उसका जवाब आता तो पढ़ कर सुनाते। फिर जब बड़ी हुई तो मुझे ख़ुद ख़त लिखने की नसीहत करते और इस ख़त का ख़ाका बना कर दिया करते और इस तरह निहायत प्यार से छोटी उम्र में ही मेरे दिल में ख़िलाफ़त से प्यार और इताअत की भावना मज़बूत कर दी।

अल्लाह तआला मरहूम से रहम और क्षमा का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। पीछे रहने वालों को भी सब्र और शान्ति प्रदान फ़रमाए।

अगला जनाज़ा ऑनरेबल काबनिए काबाजा काटे साहिब आफ़ सेनेगाल का है जो 24 अगस्त को 85 साल की उम्र में देहान्त फ़र्मा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। बड़े बहादुर, इख़लास रखने वाले, ख़िलाफ़त से मुहब्बत करने वाले,जमाअत की ग़ैरत रखने वाले, सेवा की भावना रखने वाले, क़ुर्बानी करने वाले, मेहमान नवाज़ी करने वाले थे और यह उनके बड़े विशेष गुण थे। जमाअत के वफ़्द की ज़याफ़त इंतिहाई अच्छे रंग में करते। और हमेशा यह इच्छा तथा बार बार की नसीहत होता कि जब तक जमाअत का वफ़्द उनके क्षेत्र में है आप ही उनकी मेहमान नवाज़ी करेंगे। अगर मेहमानों ने कभी बाहर से खाना खा लिया तो आप नाराज़ होते थे कि मुझे क्यों अवसर नहीं दिया। मेहमानों के लिए अपने कमरे को ख़ाली कर देते और हर सुविधा उपलब्ध करते। सोशलिस्ट पार्टी की तरफ़ से चुनाव में हिस्सा लेकर 18 साल तक देश की पार्लीमेंट के मेम्बर रहे। एक मुख़्लिस और वफ़ादार अहमदी थे। जब तक जमाअत रजिस्टर्ड नहीं हुई थी जमाअत की प्रॉपर्टी उनके नाम पर ही थी। मिशनरी इंचार्ज लिखते हैं कि जब 2012 ई में मैं सेनेगाल आया और इसके बाद जमाअत रजिस्टर्ड हो गई तो मरहूम फ़रमाने लगे कि ज़िन्दगी का अब पता कोई नहीं। आप जल्दी से यह अमानत जो जमाअत की प्रॉपर्टी है जमाअत के नाम करवाएं। फिर यह लिखते हैं कि जब भी मुश्किल वक़्त आया प्रतिरक्षा के लिए हमेशा पहली सफ़ में खड़े होते। एक मिशनरी से बढ़कर काम करने वाले थे। लम्बा समय वहां जमाअत अहमदिया तुंबा कंडा क्षेत्र के सदर के तौर पर सेवा करते रहे। मर्कज़ी आमला में बतौर सैक्रेटरी उमूरे ख़ारिजा सेवा की तौफ़ीक़ पाई। वफ़ात से पहले तीन एकड़ ज़मीन जमाअत को स्कूल के लिए पेश की। इसी तरह तीन एकड़ ज़मीन आपने जमाअत के रीजनल मिशन हाऊस के लिए भी रखी और वफात होने से पहले छ: एकड़ के काग़ज़ हमारे मुबल्लिग़ डीको हमीद साहिब के सपुर्द किए कि यह जमाअत की अमानत है ,सँभाल के रखें। और फिर कहने लगे कि मैं गिनी कनाकरी जा रहा हूँ। मुझे उम्मीद नहीं कि वापस आऊँगा।

यहां जलसे पर भी कई बार आए। जलसा पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे के ज़माने से आते रहते थे। आख़िरी बार 2019 ई के जलसा में भी शामिल हुए। मुझे भी मिले और वहां के अपने स्थानीय अमीर साहिब को कहने लगे कि ज़िन्दगी का भरोसा कोई नहीं। मेरी इच्छा है कि समय के ख़लीफ़ा के सामने बैठूँ ताकि ज़्यादा से ज़्यादा देख सकूं और बैठे रहे। बाद में मुलाक़ात में कहने लगे कि मेरा मक़सद पूरा हो गया।

मौलाना मुनव्वर ख़ुरशीद साहिब कहते हैं कि सेनेगाल में उनकी बहुत मक़बूल स्यासी और इंतिज़ामी शख़्सियत थी। सेनेगाल के प्रसिद्ध शहर तुंबा कंडा से उनका सम्बन्ध था। और उनका स्यासी ख़ानदान था। बुनियादी तौर पर यह शिक्षा विभाग से जुड़े थे। बाद में स्यासी मैदान में आ गए। 95 ई में ऑनरेबल जग जेंग डिप्टी स्पीकर नेशनल असेम्बली के द्वारा जमाअत का पैग़ाम उनको पहुंचा। फिर शीघ्र ही अल्लाह तआला ने दिल की गिरह खोल दी जिसके बाद सच्चे दिल के साथ बैअत करके

अहमदियत में शामिल हो गए। सेनेगाल में आरम्भ में बैअत करने वाले अधिकतर मज़दूर पेशा थे या ज़मींदार थे जो अपने सामर्थ्य के अनुसार माली क़ुर्बानी करते थे। जब आपने बैअत कर ली तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हमेशा दिल खोल कर माली क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ पाई। बहुत निडर और बहादुर अहमदी थे। दावत इलल्लाह का एक जुनून था। हर मिलने वाले को सच्चाई की दावत देते यहां तक कि देश के प्रधानमन्त्री को भी जमाअत का परिचय कराने की तौफ़ीक़ मिली। मरहूम का लोगों के मिलने का सम्बन्ध बहुत बड़ा था। हर मिलने वाले तक पैग़ाम पहुंचाने की कोशिश करते। हर समय उनकी गाड़ी में जमाअत का लिट्रेचर और बैअत फ़ार्म उपलब्ध होते थे। अल्लाह तआला मरहूम से क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनकी नस्ल में भी यह इख़लास तथा वफ़ादारी जारी रखे। जो अहमदी नहीं उनको अहमदियत स्वीकार करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अगला जनाज़ा आदरणीय मुबश्शिर लतीफ़ साहिब का है। सुप्रीम कोर्ट के ऐडवोकेट थे आजकल कैनेडा में थे। पहले यह लाहौर में रहे हैं। 5 मई को 85 साल की उम्र में इन की वफ़ात हो गई थी। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनको अल्लाह तआला, उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़िलाफ़त अहमदिया से बे-इंतिहा मुहब्बत थी। उनके नाना मुहतरम शेख़ महर अली साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बहुत क़रीबी दोस्त थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आपके घर होशियारपुर में चिल्ला काटा जिसके दौरान अल्लाह तआला ने आप को मुस्लेह मौऊद की महान भविष्यवाणी प्रदान फ़रमाई। 17 साल तक मुबश्शिर लतीफ़ साहिब फ़ैसल टाउन लाहौर के सदर जमाअत रहे। पाकिस्तान में जमाअत के वकीलों की जो टीम थी इस में यह शामिल थे और इस बात पर फ़ख़र करते थे। कई असीरान की सेवा और मदद का उनको अवसर मिला। इन तीन वकीलों में से एक जिन्हें 1974 ई में जमाअत के प्रतिनिधित्व का अवसर मिला। 46 साल तक पंजाब यूनिवर्सिटी में पढ़ाने के फ़राइज़ अन्जाम देते रहे। यह यूनिवर्सिटी के ला कॉलेज में पढ़ाते भी थे। लाहौर की मस्जिद मॉडल टाउन पर जब हमला हुआ तो उस वक़्त यह वहां मौजूद थे। यह तो अल्लाह के फ़ज़्ल से सुरक्षित रहे लेकिन उनके छोटे भाई नईम साजिद साहिब मौक़ा पर शहीद हो गए। इसके बाद यह भी कैनेडा चले गए। नमाज़ रोज़ा के पाबन्द तो थे ही, तहज्जुद के भी बड़े पाबन्द थे। क़ुरआन करीम से बहुत अधिक मुहब्बत करने वाले थे। अल्लाह के फ़ज़्ल से मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा छः बेटियां और काफ़ी नवासे नवासियाँ और पड़-नवासियाँ हैं।

मलिक ताहिर साहिब अमीर जमाअत लाहौर लिखते हैं कि आदरणीय बैरिस्टर मुबश्शिर लतीफ़ साहिब एक योग्य और उच्च शिक्षा प्राप्त वकील थे। यहां से भी उन्होंने उस ज़माना में ला की डिग्री हासिल की थी और जिनकी जोडेशरी (Judiciary) में बहुत इज़्ज़त थी। जमाअत के मुक़द्दमों के सिलसिले में 1984 ई के बाद हमारे नौजवानों के ख़िलाफ़ जब कलिमा तय्यबा के बारे में केस बने तो उनकी पेशी आम मजिस्ट्रेट की अदालत में हो रही थी। यद्यपि मुबश्शिर साहिब हाईकोर्ट से नीचे की अदालतों में पेश नहीं होते थे लेकिन जमाअत के हित में मजिस्ट्रेट के सामने भी पेश होते रहे और जमाअत के मुक़द्दमों में निःस्वार्थ सेवा करते थे। बहुत अच्छी राए देने वाले और क़ानूनी मश्वरे देते थे। बहुत से मजिस्ट्रेट और जज भी उनके शागिर्द रहे हुए हैं लेकिन उनको अपने शागिर्दों के सामने पेश होने से भी कोई लज्जा नहीं था। आम तौर पर मजिस्ट्रेट की अदालत में सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के वकील पेश नहीं होते।

मुबारक ताहिर साहिब मुशीर क़ानूनी कहते हैं कि मुबश्शिर लतीफ़ साहिब की जमाअत की सेवाओं का सिलसिला 1974 ई से शुरू हुआ। आपने समदानी कमीशन में ग़ैर अज़ जमाअत वकील एजाज़ हुसैन बटालवी साहिब को भी असिस्ट (assist) किया। 1984 ई के आर्डीनैंस के ख़िलाफ़ जो केस शरई अदालत में दायर किया गया था उस के पैनल में भी मुबश्शिर लतीफ़ साहिब शामिल रहे। मुंसिफ़ाना क़ानून के अधीन तो इस पर कुछ नहीं होना था और यह पता था कि नहीं होगा लेकिन उन्होंने और उनके साथियों ने बड़ी मेहनत से यह सारा केस तैयार किया।

अल्लाह तआला उनसे क्षमा और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे और उनके वारिसों को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और शान्ति प्रदान फ़रमाए।

नमाज़ के बाद इंशा अल्लाह इन सब का नमाज़ जनाज़ा भी होगा।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 2 अक्तूबर 2020 पृष्ठ 5 से10)

☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

होना चाहिए कि मुसलमान ज़बरदस्ती अपने अक़ीदों को फैलाएंगे या बलात अपने दृष्टिकोण को इस धरती पर लागू करेंगे। उग्रवाद का मार्ग धारण करने वाली तथा कथित मुसलमानों की एक छोटी सी गिनती क़ुरआन करीम की शिक्षाओं के प्रतिनिधि नहीं। मैं कई बार यह बात कह चुका हूँ कि हुकूमतों और सामर्थवान लोगों को उग्रवादियों की सख़्ती से रोक-थाम करनी चाहिए, चाहे यह उग्रवादी मुसलमान हों या ग़ैर मुस्लिम।

बहैसीयत जमाअत अहमदिया मुस्लिमा , हमारा ईमान है कि इस्लाम किसी भी अवस्था में बलात या ताक़त के द्वारा धर्म को फैलाने की आज्ञा नहीं देता। फिर इस्लाम से भयभीत होने का क्या कारण रह जाता है? फिर क्यों कोई विचार करे कि उसकी तहज़ीब या संस्कृति इस्लाम के हाथों ख़तरे में है।

इस्लामी दृष्टिकोण से तहज़ीब और संस्कृति के अन्तर को वर्णन कर देने के बाद अब मैं इस्लाम की कई बुनियादी शिक्षाएं वर्णन करूँगा। इस्लाम और इस्लाम धर्म के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में बहुत से वहम और ग़लत-फ़हमियाँ आम कर दी गई हैं। इस संक्षिप्त समय में इस्लामी शिक्षा के समस्त पहलूओं का वर्णन करना तो संभव नहीं, परन्तु मैं इन्सानी अधिकार की स्थापना से बारे में इस्लाम की कुछ शिक्षाएं वर्णन करूँगा।

इन्सानी अधिकार के हवाला से क़ुरआन करीम की चौथी सूरत की 37 वीं आयत बुनियादी है, जिसमें फ़रमाया: "और तुम अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को उसका साझा न बनाओ और माता पिता के साथ उपकार का सुलूक करो और रिश्तेदारों और अनाथों और मिस्कीनों के साथ और इसी तरह रिश्तेदार पड़ोसियों और बे-तअल्लुक़ पड़ोसियों और पहलू में बैठने वाले लोगों और मुसाफ़िरों और जिन के तुम मालिक हो।"

इस आयत में जहां मुसलमानों को अल्लाह तआला ने अपनी इबादत का आदेश दिया, वहां माता पिता के साथ मुहब्बत और दिलदारी की भी नसीहत फ़रमाई। यह शिक्षा, जो मुसलमानों से माता पिता के साथ मुहब्बत और एहसान की मांग करती है, किसी भी धर्म या क़ौम से किस तरह टकरा सकती है? यह आयत तो मुसलमानों से रिश्तेदारों और प्रियों से रहम और मुहब्बत के व्यवहार की मांग भी करती है। यतीमों और समाज के अन्य द्ररिद्रों को आराम और सुविधा पहुंचाने की मांग भी करती है।

इस मामला में हमारी आस्था है कि ग़रीबों की मदद का एक प्रमुख माध्यम शिक्षा है। अगर ग़रीब घरानों या ग़रीबी से प्रभावित समाज के लोगों को शिक्षा की सुविधा दी जाए तो उन मुसीबतों के चंगुल से नजात प्राप्त करने के योग्य हो सकते हैं। ऐसे नौजवानों को अवसर उपलब्ध हो जाऐंगे और वे आशा और निराशा से आज़ाद होकर, जुर्म करने वाला बनने के स्थान पर समाज के सक्रिय और लाभदायत लोग बन जाऐंगे। यही कारण है कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा शिक्षा को बहुत महत्त्व देती है और अपने सीमित संसाधन में रहते हुए हमने अफ़्रीक़ा के विभिन्न देशों में स्कूल भी खोले हैं और ऐसे छात्रों के लिए वज़ीफ़े भी जारी कर रखे हैं जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने की योग्यता रखते हैं।

हमारा दृष्टिकोण है कि अमीर देशों को दुनिया की कमज़ोर क़ौमों की ठोस बुनियादों पर मज़बूत होने में मदद करनी चाहिए। यदि ग़रीब देश अपनी आर्थिक और अपने बुनियादी ढाँचे मज़बूत कर लें तो उनके शहरियों को अपने ही देश में अवसर उपलब्ध आ जाऐंगे और उन्हें देश छोड़ कर दूसरे देश चले जाने की ज़रूरत भी कम महसूस होगी। अगर उनके अपने देशों सुदृढ़ होकर तरक़्क़ी की राहों पर चल निकलें तो उसके फ़ित्री नतीजा के तौर पर उनके अपने क्षेत्र के साथ साथ दुनिया के अन्य क्षेत्र भी लीभान्वित होंगे।

क़ुरआन करीम की ऊपर वर्णन की गई आयत में पड़ोसी के अधिकार की अदायगी का विशेष रूप से वर्णन है, चाहे वे मुसलमान हों या ग़ैर मुस्लिम। पड़ोस की हद भी बड़ी व्यापक वर्णन हुई है इस्लाम के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला ने पड़ोसी के अधिकार पर इस क़दर ज़ोर दिया कि उन्होंने यह सोचा कि शायद उसे विरासत में भी हिस्सादार बना दिया जाए।

इस्लाम धर्म के संस्थापक ने यह शिक्षा भी दी कि जो इन्सान का शुक्रगुज़ार नहीं, वह अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार भी नहीं हो सकता। क्या ही ख़ूब नियम है !अतः ख़ुदा तआला की इबादत के साथ यह भी ज़रूरी है कि इन्सानियत के अधिकार भी अदा किए जाएं।

मैं फिर पूछता हूँ कि ऐसी शिक्षा पश्चिमी संस्कृति के लिए ख़तरा क्यों कर हो सकती है? अत: मेरे विचार में पश्चिम वालों का यह कहना व्यर्थ होगा कि इस्लाम और मुसलमानों को दुनिया के इस हिस्सा में कोई स्थान नहीं है। अगर मुसलमान इस समाज का हिस्सा बनने, पड़ोसियों के अधिकार अदा करने और देश तथा क़ौम की तरक़्क़ी और उन्नति की कोशिश करने की नीयत लेकर यहां आएं, तो यह तिरस्कार योग्य नहीं बल्कि प्रशंसा के योग्य बात है।

कुछ लोग इस विचार के माने वाले हैं कि मुसलमानों को जिहाद का आदेश दिया गया है, अत: वे पश्चिम में आकर सख्त जंग छेड़ देंगे और इस्लामी संस्कृति को बलात लागू करते हुए समाज का अमन और शान्ति बर्बाद कर देंगे। यह विचार जिहाद की शिक्षा और इस्लामी इतिहास के आरम्भिक दौर में लड़ी जाने वाली जंगों के बारे में बड़ी ग़लत-फ़हमियों पर आधारित है। वास्तव में इस्लाम ख़ूनी या ज़बरदस्ती वाला धर्म नहीं है।

एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी ने इस्लामी फ़ौज में शामिल होकर जिहाद करने की आज्ञा चाही। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसका निवेदन इस आधार पर रद्द कर दिया कि उसके माता पिता वृद्ध थे। बल्कि उसे आदेश दिया कि वह घर में रह कर उनकी सेवा करे, कि यही उसका जिहाद होगा। अगर जिहाद का उद्देश्य जंग तथा लड़ाई और ख़ूँन करना ही होता तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके निवेदन को शीघ्र स्वीकार करते हुए मुस्लिम फ़ौज को मज़बूती देने को प्राथमिकता देते।

यह स्पष्टता भी ज़रूरी है कि इस्लाम के आरम्भिक ज़माना में जो जंगें लड़ी गईं उनका उद्देश्य हुकूमत प्राप्त करना या ज़ुल्म या स्थानीय लोगों को बलात इस्लाम स्वीकार करवाना नहीं था। उन जंगों का उद्देश्य धर्म की सुरक्षा और धर्म की आज़ादी की स्थापना था।

क़ुरआन करीम की 22 वीं सूरत की आयतें 40 और 41 में फ़रमाया है कि अगर धार्मिक उग्रवादियों को रोक न दिया जाता तो कलीसा और मअबद और मंदिर और मस्जिदें और अन्य उपासना स्थल बहुत ख़तरे का शिकार हो जातीं। मक्का के काफिरों का यही तो उद्देश्य था कि धर्म के समस्त निशानों को धरती से मिटा दिया जाए। यह प्रमाण है कि इस्लाम समस्त धर्मों की सुरक्षा का ज़िम्मेदार है।

फिर बच्चों की परवरिश के बारे में क़ुरआन करीम की छटी सूरत की आयत नम्बर 152 में आता है कि मुसलमान औलाद को क़त्ल न करें। यहां औलाद से मुहब्बत और दया का हुक्म भी है और उन्हें शिक्षा दिलाने, उनकी तर्बीयत करने का आदेश भी, ताकि वे बड़े होकर निहायत योग्य और आचरण वाले लोग बनें और देश तथा क़ौम का सरमाया हों।

इसी तरह इस्लाम ने मुसलमानों को यह आदेश भी दिया है कि वह समाज के कमज़ोर लोगों के अधिकार की सुरक्षा करें। जैसे क़ुरआन करीम की चौथी सूरत की सातवीं आयत में मुसलमानों को पाबन्द किया गया है कि वह यतीम बच्चों के अधिकारों की रोकथाम करें और उनकी इज़्ज़त और उनके विरासत के अधिकार की सुरक्षा करें, यहां तक कि वे ऐसी उम्र को पहुंच जाएं जहां वे इन मामलों में ख़ुद फैसला लेने वाले हों।

पश्चिमी दुनिया में इस्लाम पर एक और आरोप यह है कि मुसलमान औरतों और उनके अधिकार को महत्व नहीं देते। पहले तो यह स्पष्ट होना चाहिए कि सबसे पहले इस्लाम ने ही औरत को विरासत में हक़ दिया, ख़ुलअ का हक़ दिया और उसके अन्य अधिकार स्थापित किए। इसके साथ इस्लाम औरतों की शिक्षा और औरतों को व्यक्तिगत तरक़्क़ी तथा भलाई के अवसर उपलब्ध कराने पर भी ज़बरदस्त ज़ोर देता है।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक प्रसिद्ध फ़रमान है कि माँ के क़दमों के नीचे जन्नत है। यह शब्द समाज में औरत के महती भूमिका और निहायत स्पष्ट और अदभुत स्थान का द्योतक हैं। माताएं ही तो हैं जिनके पास यह ताक़त और योग्यता है कि वे अपनी क़ौम को जन्नत जैसा बना दें और अपने बच्चों के लिए स्थायी जन्नतों के दरवाज़े खोल दें।

इसी तरह क़ुरआन करीम की चौथी सूरत की 20 आयत में मुसलमान पुरुषों को आदेश दिया गया है कि वह अपनी बीवियों से मुहब्बत और सम्मान से पेश आएं। पश्चिमी देशों में तो कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता जब घरेलू हिंसा की घटनाओं में पुलिस और अदालतों के दख़ल की ख़बरें न आती हों। कई तहक़ीक़ात और रिपोर्टों से, जैसे बर्तानिया के क़ौमी जनसंख्या की 2018 ई की रिपोर्ट से प्रमाणित है कि ऐसे जुर्म किसी धर्म से विशेष नहीं। एक और हालिया रिपोर्ट से यह भी साबित है कि जर्मनी भी ऐसी घटनाओं से अलग नहीं। अत: इस्लाम को औरत विरोधी धर्म क़रार देना सख़्त अन्याय है।

इस्लाम अपने अनुयायियों से इस बात की भी मांग करता है कि वे दूसरे धर्मों के अनुयायियों की आस्थाओं और धार्मिक भावनाओं का एहसास करें। मीसाक़े मदीना इस शिक्षा का स्पष्ट प्रमाण है जहां तौरात को यहूद की शरीयत की किताब के तौर पर स्वीकार किया गया।

इस्लाम ने तो दुश्मनों और विरोधियों तक के अधिकारों की सुरक्षा की शिक्षा दी है। दूसरी सूरत की आयत नम्बर 191 में जंग की अवस्था में भी विरोधी के साथ ज़्यादती करने की मनाही आई है। अफ़सोस कि वर्तमान दुनिया में, जो भूतकाल के किसी भी ज़माना से अधिक सुसभ्य होने की दावेदार है, लोगों और विरोधी क़ौमों के अधिकार को नष्ट करते हुए सख़्त ज़ालिमाना कार्यवाईयों के करने वाले होते हैं और इंतिक़ाम का कोई अवसर नहीं जाने देते।

क़ुरआन करीम की पांचवीं सूरत की नौवीं आयत में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि किसी क़ौम या गिरोह की दुश्मनी तुम्हें न्याय और इन्साफ़ पर समझौता करने पर मजबूर न करे। बल्कि इस्लाम तो आदेश देता है कि हर अवस्था में न्याय तथा इन्साफ़ के नियमों पर स्थापित रहा जाए और कभी इंतिक़ाम की भावना को ग़ालिब न आने दिया जाए।

इस शिक्षा का बेहतरीन अनुकरणीय उदाहरण हमें रहम, क्षमा और दरगुज़र के इस अदभुत व्यवहार से मिलता है जिसका प्रदर्शन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़तह मक्का के अवसर पर फ़रमाया। इतिहास गवाह है कि मक्का में मुसलमानों पर कष्टों और मुसीबतों के पहाड़ तोड़े गए, उनकी जानें ली गईं, उन्हें बेघर कर दिया गया। यहां तक कि उन्हें हिजरत करनी पड़ी जब आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ातिहाना शान से मक्का लौटे और ऐसे में कि समस्त शहर आपके अधीन। आप ने ऐलान फ़रमाया कि मुसलमानों पर ज़ुल्म करने वालों से कोई बदला नहीं लिया जाएगा। आपने ऐलान फ़रमाया कि इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार मुसलमानों पर ज़ुल्म करने वालों को शीघ्र माफ़ कर दिया जाए और किसी के साथ भी अन्यायपूर्ण सुलूक न किया जाए, चाहे कोई इस्लाम स्वीकार करे या न करे।

इस्लाम के द्वारा समाज के कमज़ोर लोगों के लिए एक और इन्क़िलाब ग़ुलामी के हवाला से आया जिसे इस्लाम से पहले जायज़ और मामूल का हिस्सा समझा जाता था। क़ुरआन करीम की 24 वीं सूरत की 34 वीं आयत में फ़रमाया कि अगर कोई ग़ुलाम आज़ादी की मांग करे तो उसे आज़ाद कर दिया जाए। अगर कोई आर्थिक बदला लेना ज़रूरी भी हो तो वह उचित और अदा करने योग्य किस्तों में लिया जाए या फिर माफ़ ही कर दिया जाए।

आज ज़ाहिरी ग़ुलामी का दौर तो नहीं परन्तु उस के स्थान पर आर्थिक पाबंदियों और बंदिशों ने ले ली है। ताक़तवर क़ौमें और कमज़ोर क़ौमों का आपसी रिश्ता आक़ा और ग़ुलाम के सम्बन्ध की शक्ल धारण कर गया है। जैसे अमीर देशों की तरफ़ से ग़रीब देशों को सहायता के नाम पर दिए जाने वाले कर्ज़े, जिन्हें स्वीकार करने के अतिरिक्त ग़रीब देशों के पास कोई और उपाय नहीं होता, चाहे शर्तें जैसी भी हों। फिर सूद की कमर तोड़ देने वाली ब्याज ज़ाहिर में कम समय सीमा के कर्ज़ों को दूर गामी मुसीबतों और पाबंदियों में बदल देती है। परिणाम में कर्ज़ा ने वाले देश के पास ग़ालिब क़ौम के सामने झुकते चले जाने के सिवा कोई उपाय नहीं रह जाता। यह ग़ुलामी बिल्कुल अनुचित है।

इस्लाम ने आरम्भ ही से ग़ैर मुस्लिमों के अधिकार भी स्थापित कर दिए और मुसलमानों को समाज में अमन और एकता की स्थापना पर पाबन्द कर दिया। जैसे क़ुरआन करीम की छटी सूरत की आयत नम्बर 109 में आदेश फ़रमाया कि मुसलमान मुशरिकीन के बुतों को भी बुरा न कहें, शायद यह मुश्रिकीन को अल्लाह तआला की शान में गुस्ताख़ी करने पर उकसाए।

इस संक्षिप्त समय में मैंने कुछ बिन्दु वर्णन किए हैं जिनसे प्रमाणित होता कि इस्लाम ने किस तरह इन्सानियत के अधिकार को स्थापित फ़रमाया। मुझे उम्मीद है कि मेरे निवेदनों से आपको यह सन्तोष प्राप्त हुआ होगा कि इस्लाम पश्चिमी सभ्यता या संस्कृति के लिए ख़तरा नहीं है। अगर कोई मुसलमान ग़ैर मुस्लिमों के अधिकार को नष्ट करता है तो वह इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध करता है या फिर वह इस शिक्षा से परिचित ही नहीं।

सारी बात का सार यह कि हम एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जो तबाही के किनारे पर खड़ी है और अंदेशा है कि यह हालत और अधिक बिगड़ जाए।

इस बात को समझने की ज़रूरत है कि शब्दों के परिणाम स्थायी हो सकते हैं। अत: तहज़ीबों के टकराव की बात करने के स्थान पर, क़ौमों के मध्य बिला ज़रूरत तनाव पैदा करने के स्थान पर, एक दूसरे की धार्मिक शिक्षाओं पर हमले करने से बचना ज़रूरी है। बजाय अक़ीदों के इज़हार पर पाबंदियां लागू करने के, हमें यह विचार रखना चाहिए कि हम सब एक ही इन्सानी नस्ल का हिस्सा हैं और आज पहले की तुलना में अधिक जुड़े हुए हैं। विभिन्न रंग तथा नसल और धर्म का सम्मान करते हुए हमें एकता की स्थापना की तरफ़ ध्यान देना चाहिए ताकि दुनिया में स्थायी अमन स्थापित हो सके।

हां, वर्तमान अवस्था तो इसके विपरीत है। क्या मुस्लिम और क्या ग़ैर मुस्लिम, हर क़ौम अपने स्वार्थों को दुनिया के व्यापक स्वार्थों पर प्राथमिकता देते हुए, न्याय और आचरण की सीमाएं पार करते हुए अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने पर कमर बांधे हुए है। भूत काल के अन्धकारमय ज़मानों की तरह विरोध वाले इत्तिहाद और गिरोह उभर रहे हैं। ऐसा मालूम होता है कि दुनिया अपनी तबाही को दावत देने पर तत्पर है।

आज कई देशों ने ऐसे न्यूक्लियर हथियार और तबाही के हथियार प्राप्त कर लिए हैं जो सभ्यता को तबाह कर देने की ताक़त रखते हैं। कौन कह सकता है कि यह हथियार भी प्रयोग न होंगे या ग़लत हाथों में न चले जाऐंगे ? अगर यह न्यूक्लियर हथियार कभी प्रयोग हो गए, उनके बुरे प्रभाव केवल हम पर ही नहीं पड़ेंगे, बल्कि हमारी औलाद और अगली नस्लें भी हमारे गुनाहों का बदला भुगतेंगी। कई नस्लों तक ऐसे ज़ेहनी और जिस्मानी तौर पर अपाहिज बच्चे पैदा होंगे जिनकी उमंगों और ख़्वाबों के उजड़ जाने में उनका अपना कोई दोष नहीं होगा।

क्या हम अपने बाद आने वालों के लिए ऐसा विरसा छोड़कर जाना चाहते हैं? निसन्देह नहीं।

इसलिए धार्मिक, नसली या राजनीतिक मतेभदों की बुनियाद पर नफ़रत की चिंगारियों को हवा देने के स्थान पर , हमें अपने व्यवहार में तबदीली करनी होगी। इस से पहले कि बहुत देर हो जाए।

आइए समस्त मतभेदों को दूर करते हुए, आपसी सम्मान, बर्दाश्त और मुहब्बत की भावना के साथ विश्वव्यापि अमन और धर्म आज़ादी की स्थापना के लिए मिलकर कोशिश करें। इन शब्दों के साथ मैं एक बार फिर उस आयोजन में शामिल होने पर आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। बहुत बहुत शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 8 बजकर 17 मिनट पर ख़त्म हुआ। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई जिसमें मेहमान अपने अपने तरीक़ा पर शामिल हुए। इसके बाद मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ खाना खाया।

डिनर के प्रोग्राम के बाद बहुत से मेहमानों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर के पास जाकर मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर स्नेह करते हुए मेहमानों से गुफ़्तगु फ़रमाते रहे। कई मेहमान तो हुज़ूर अनवर की साथ वाली कुर्सी पर बैठ जाते और काफ़ी देर तक हुज़ूर अनवर से गुफ़्तगु करते, तस्वीरें भी साथ साथ बन रही थीं।

9 बजकर 45 मिनट पर इस आयोजन का समापन हुआ और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ होटल से बाहर तशरीफ़ ले आए। यहां से वापस मस्जिद ख़दीजा बर्लिन से जाने से पहले Branden Burger Gate के सामने स्थानीय प्रबन्धकों और क़ाफ़िला के मेम्बरों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ यहां से रवाना होकर 9 बजकर 45 मिनट पर मस्जिद ख़दीजा बर्लिन तशरीफ़ ले आए।

सवा दस बजे हुज़ूर अनवर ने मस्जिद ख़दीजा तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

(शेष..................)

☆ ☆ ☆ ☆

नेकियों पर दृढ़ता

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ

(हूद:113)

अनुवाद: (हे रसूल) तू उन (लोगों) सहित जिन्होंने तेरे साथ हो कर (हमारी तरफ़ रुजू किया है (इस तरह पर) जिस तरह तुझे हुक्म दिया गया है सीधी राह पर क़ायम रह। और (हे मोमिनो) तुम कभी सीमा से न बढ़ना। जो कुछ तुम करते हो वह उसे देख रहा है।

हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह तआला अन्हा वर्णन करती हैं कि रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सबसे अधिक कर्म वह अच्छा लगता था जिस पर कोई स्थायी रूप से निरन्तर क़ायम रहे।

(सही बुख़ारी किताबुल रिक़ाक,)

हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह तआला अन्हा वर्णन करती हैं कि आप फ़रमाते हैं أَحَبُّ الْأَعْمَالِ إِلَى اللّٰهِ مَا دُوِّمَ عَلَيْهِ ख़ुदा को सबसे ज़्यादा पसंदीदा कर्म वे हैं जिन पर स्थायित्व धारण किया जाए , وَإِنْ قَلَّ चाहे वह थोड़े ही क्यों न हों और आप की पत्नियों और औलाद की भी यह आदत थी कि जब वह कोई काम करते तो इस को निरन्तर और दिल लगा कर करते थे।

(सही मुस्लिम, किताबुस्सलात)

हज़रत अलक़मह रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने हज़रत आयशा रज़ि से निवेदन किया कि क्या रसूलुल्लाह किसी मामला के लिए दिनों को विशेष करते थे? हज़रत आयशा रज़ि ने फ़रमाया कि नहीं बल्कि كَانَ عَمَلُهُ دِيْمَةً के अमल में हमेशगी होती थी और तुम में कौन है जो इन अम्लों की ताक़त रखता हो जिनकी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ताक़त रखते थे।

(सही अल-बुख़ारी, किताबुस्सौम)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"इस्तिक़ामत को प्राप्त करने के लिए सर्व प्रथम आरम्भिक स्तर पर कुछ तकलीफ़ें और मुश्किलें भी पेश आती हैं लेकिन इसके हासिल होने पर एक स्थायी राहत और ख़ुशी पैदा हो जाती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब ये इरशाद हुआ فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ तो लिखा है कि आपका कोई सफ़ेद बाल न था फिर सफ़ेद बाल आने लगे तो आप ने फ़रमाया मुझे सूरत हूद ने बूढ़ा कर दिया। अत: यह है कि जब तक इन्सान मौत का एहसास न करे वह नेकियों की तरफ़ झुक नहीं सकता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 281-282)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"जब नेकियों के रास्ते पर इस रमज़ान में चलें तो यह भी इस रमज़ान में दुआएं करते रहना चाहिए कि नेकियां रमज़ान के ख़त्म होने के साथ ख़त्म न हो जाएं बल्कि हमेशा हमारी ज़िन्दगियों का हिस्सा बनी रहीं। और हम में से हर एक अल्लाह तआला के प्यारों में शामिल हो, उस का प्यार हासिल करने वाला हो और हमेशा उस की प्यार की नज़र हम पर पड़ती रहे। और यह रमज़ान हमारे लिए , जमाअत के लिए ग़ैरमामूली विजय लाने वाला हो अल्लाह करे ऐसा ही हो।"

(ख़ुत्बाते मसरूर भाग 2 पृष्ठ 754)

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हम सब को नेकियों पर दृढ़ता प्रदान करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए। आमीन

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 15 October 2020 Issue No.42

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

मल्फ़ूज़ात पृष्ठ 1 का शेष

व्याख्या लोगों के अच्छी तरह ज़हन नशीन की। आप की वाणी में महिलाओं के साथ हुस्ने सुलूक और उनके अधिकार और उनकी योग्यताओं के बारे में जितने उपदेश पाए जाते हैं उनका दसवाँ हिस्सा भी किसी और धार्मिक पेशवा की शिक्षा में नहीं मिलता। आज सारी दुनिया में यह शोर मच रहा है कि औरतों को उनके अधिकार देने चाहिएं और कुछ पश्चिमी सभ्यता को पसन्द करने वाले नौजवान तो यहां तक कह देते हैं कि औरतों को अधिकार ईसाइयत ने ही दिए हैं हालांकि औरतों के अधिकारों के सिल्सिला में इस्लाम ने जो व्यापक शिक्षा दी है ईसाइयत की शिक्षा उसके बराबर नहीं।

अरबों में रिवाज था कि विरसा में अपनी माताओं को भी बांट लेते थे परन्तु इस्लाम ने ख़ुद औरत को वारिस क़रार दिया। बीवी को पति का, बहन को बाप का और कई अवस्थाओं में बहन को भाई का भी।

अत: फ़रमाया وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ अर्थात इन्सानी अधिकारों का जहां तक प्रश्न है औरतों को भी वैसा ही हक़ प्राप्त है जैसे मर्दों को। इन दोनों में कोई अन्तर नहीं। अल्लाह तआला ने जिस तरह मर्दों और औरतों को एक जैसे आदेश दिए हैं इसी तरह इनामों में भी उन्हें बराबर क़रार दिया है और जिन नेअमतों के मर्द अधिकारी होंगे इस्लामी शिक्षा के अधीन क़यामत के दिन वही नेअमतें औरतों को भी मिलेंगे। अत: अल्लाह तआला ने न केवल इस दुनिया में उनका कोई अधिकार मारा है और न अगली दुनिया में उन्हें किसी इनाम से वंचित रखा है। हाँ आपने इस बात का भी ऐलान फ़रमाया कि وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ अर्थात अधिकारों की दृष्टि से तो मर्द तथा औरत में कोई अन्तर नहीं लेकिन प्रबन्ध की दृष्टि से मर्दों को औरतों पर एक प्राथमिकता का हक़ प्राप्त है इसकी ऐसा ही उदाहरण है जैसे एक मजिस्ट्रेट इन्सान होने के लिहाज़ से तो आम इन्सानों जैसे अधिकार रखता है और जिस तरह एक छोटा से छोटा इन्सान को भी ज़ुल्म और अत्याचार की आज्ञा नहीं इसी तरह मजिस्ट्रेट को भी नहीं परन्तु फिर भी वह बहैसीयत मजिस्ट्रेट अपने अधीनों पर प्राथमिकता रखता है और उसे क़ानून के अनुसार दूसरों को सज़ा देने के अधिकार प्राप्त होते हैं। इसी तरह सभ्याचारिक और धार्मिक मामलों में मर्द तथा औरत दोनों के अधिकार बराबर हैं लेकिन मर्दों को अल्लाह तआला ने क़व्वाम होने के कारण से प्राथमिकता प्रदान फ़रमाई है लेकिन दूसरी तरफ़ उसने औरतों को दिल को आकर्षित करने की ऐसी ताक़त दे दी है जिसके कारण से वे कई बार मर्दों पर ग़ालिब आ जाती हैं। बंगाल की जादूगर औरतें तो जैसा कि आम तौर पर मशहूर है मर्दों पर जादू सा कर देती हैं। अत: जहां मर्द को औरत पर एक रंग में प्राथमिकता दी गई है, वहां औरत को दिल को आकर्षित करने की शक्ति प्रदान फ़र्मा कर मर्द पर प्रभुत्व दे दिया गया है , जिसके कारण से कई बार औरतें मर्दों पर इस तरह हुकूमत करती हैं कि यूं मालूम होता है कि सब कारोबार उन्हीं के हाथ में है। वास्तव में हर व्यक्ति की अलग अलग रंग की हुकूमत होती है। जहां तक शरीयत के आदेशों और निज़ाम की स्थापना का प्रश्न है, अल्लाह तआला ने मर्द को औरत पर प्राथमिकता दे दी है जैसे शरीयत का यह आदेश है कि कोई लड़की अपने माँ बाप की आज्ञा के बिना शादी नहीं कर सकती। यह आदेश ऐसा है जो अपने अंदर बहुत बड़े लाभ रखता है। यूरोप में हज़ारों उदाहरण ऐसे पाए जाते हैं कि कई लोग धोखेबाज़ और फ़रेबी थे परन्तु इस कारण से कि वह अच्छे रख रखाव वाले नौजवान थे उन्होंने बड़े बड़े घरानों की लड़कियों से शादियां कर लीं और बाद में कई किस्म की ख़राबियां पैदा हुईं । लेकिन हमारे देश में ऐसा नहीं होता क्योंकि रिश्ता के चुनाव के समय बाप ग़ौर करता है माता ग़ौर करती है भाई सोचते हैं रिश्तेदार तहक़ीक़ करते हैं और इस तरह जो बात तय होती है वह प्राय उन त्रुटियों से पवित्र होती है जो यूरोप में नज़र आती हैं। यूरोप में तो यह दोष इतना अधिक है कि जर्मनी के भूतपूर्व शहंशाह की बहन ने इसी अज्ञानता के कारण से एक बावर्ची से शादी कर ली उसका रहन सहन अच्छा था और उसने मशहूर यह कर दिया था कि वह रूस का शहज़ादा है जब शादी हो गई तो बाद में पता चला कि वह तो कहीं बावर्ची का काम किया करता था। यह घटनाएं हैं जो यूरोप में प्रचुरता से होती रहती हैं। इन घटनाओं से यह बात प्रमाणित हो जाती है कि ख़ुदा तआला ने मर्दों के क़व्वाम होने के बारे में जो कुछ फ़ैसला किया है वह बिल्कुल ठीक है। शरीयत की इस से यह इच्छा नहीं कि औरतों पर ज़ुल्म हो या उनका कोई हक़ मारा जाए बल्कि शरीयत का इस अन्तर से यह इच्छा है कि जिन बातों में औरतों को नुक़्सान पहुंच सकता है उन में औरतों को नुक़्सान से सुरक्षित रखा जाए। इसी कारण से जिन बातों में औरतों को कोई हानि नहीं पहुंच सकती उनमें उनका हक़ ख़ुदा तआला ने ख़ुद ही उन्हें दे दिया है। अत: क़ुरआन करीम ने जो कुछ कहा है वह अपने अंदर बहुत बड़ी हिकमतें और गूढ़ रहस्य रखता है। यदि दुनिया उनके विरुद्ध अमल कर रही है तो वे कई प्रकार के नुक़्सान भी बर्दाश्त कर रही है जो इस बात का प्रमाण हैं कि इस्लाम के ख़िलाफ़ अनुकरण करना कभी नेक नतीजों को प्रकट नहीं कर सकता।

(तफ़सीरे कबीर, भाग 2 पृष्ठ 512 से 513 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर (उत्तर प्रदेश)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad